दैनिक

CIN-No-UT4999RJ2020PTC0679
UN NO-200022186

Tital Code:RAJHIN27921

# मरुधर विशेष

Marudharvishesh@gmail.com मो.7014373732

वर्ष: 01 | अंक : 133 | जयपुर | 22 दिसंबर 2022 | गुरुवार | मूल्य: रु. 5 | पृष्ठ : 06

# यात्रा को कोरोना से जोड़ना भाजपा की बौखलाहट:गोविंद सिंह डोटासरा

जयपुर. राजस्थान के तीन भाजपा सांसदों की मांग पर केंद्र सरकार ने राहुल गांधी से यात्रा रोकने की अपील की है। इसके लिए कोरोना महामारी बढ़ने का हवाला दिया है। भाजपा सांसद पीपी चौधरी, निहालचंद मेघवाल और देवजी पटेल की ओर से उठाई गई मांग को आधार बनाते हुए केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया ने राहुल को लेटर लिखा है। उन्होंने कहा कि देश में कोरोना का खतरा देखते हुए कोविड गाइडलाइन का पालन किया जाए। अगर गाइडलाइन नहीं अपना पा रहे तो भारत जोड़ो यात्रा स्थगित कर दें। इस लेटर के बाद राजनीति गरमा गई है। कांग्रेस ने सवाल उठाया है कि भाजपा सांसदों और केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री को राहुल की यात्रा दिख रही है लेकिन भाजपा की जनाक्रोश यात्राएं क्यों नहीं दिख रही? कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने कहा कि राहुल की यात्रा को कोरोना से जोड़ना भाजपा की बौखलाहट को दशार्ता है। भारत जोड़ो यात्रा को जिस तरह जबर्दस्त सफलता मिल रही है, उसको देखकर भाजपा घबरा गई है। डोटासरा ने कहा कि राहुल गांधी की यात्रा सफलता से राजस्थान से गुजर गई, कहीं कोरोना का एक केस भी सामने नहीं आया। राहुल गांधी को यात्रा रोकने का लेटर लिखने से पहले केंद्र सरकार को राज्य सरकार से जानकारी मांगनी चाहिए थी कि कहीं कोई कोरोना का मामला मिला है क्या? डोटासरा

ने कहा कि राहुल गांधी जैसा अपनी यात्राओं में कह रहे हैं कि देश में बोलने का अधिकार छीना जा रहा है। देश में नफरत फैलाई जा रही है। आम आदमी महंगाई की मार से परेशान है। राहुल की ये बातें भाजपा को डरा रही है। इसी डर के कारण अब राहुल की यात्रा को येनकेन प्रकारेण डिस्टर्ब करने की कोशिश हो रही है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री को राहुल की यात्रा तो दिख रही है लेकिन भाजपा की जनाक्रोश यात्राएं नहीं दिख रही। राहुल को जिस तरह से लेटर लिखा गया, उनको राजस्थान के भाजपा नेताओं को भी लिखना चाहिए था। उधर, भाजपा के जिन तीन सांसदों की मांग पर केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने राहुल गांधी को यात्रा रोकने का लेटर लिखा गया मेघवाल से पूछा गया कि आपने राहुल गांधी की यात्रा को रोकने के लिए केंद्र सरकार को पत्र लिखा लेकिन भाजपा की जनाक्रोश यात्राओं को लेकर आपका क्या स्टैंड है? इस पर सांसद मेघवाल ने कहा कि राहुल गांधी की यात्रा में कोरोना के केस सामने आ रहे हैं, इसलिए हमने केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री को लेटर लिखा था। भाजपा की यात्राओं के लिए उन्होंने कहा कि इस बारे में हमने कोई मांग नहीं उठाई। हालांकि उन्होंने यह जरूर कहा कि अगर कोई कोरोना पीड़ित है तो उसको बाकी लोगों के स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए जनाक्रोश यात्राओं में शामिल नहीं होना चाहिए।

## संविधान पार्क में नए साल से एंट्री

### -हफ्ते में 2 दिन आम पब्लिक के लिए खुलेंगे राजभवन के दरवाजे

जयपुर. राजस्थान में नए साल से पहली बार राजभवन के दरवाजे आमजन के लिए खुलेंगे। जयपुर में लोगों को राजभवन के साथ ह्यसंविधान पार्कह्न देखने का मौका मिलेगा। स्मार्ट सिटी के बजट से बनाए गए इस पार्क का 3 जनवरी को उद्घाटन हो सकता है। इसके लिए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू भी आ सकती हैं। उद्??घाटन के लिए राजभवन ने यूडीएच को भी लिखा है। इसके बाद आमजन, स्टूडेंट आदि के लिए प्रवेश खोला जाएगा। इससे पहले स्मार्ट सिटी के बजट से विधानसभा में डिजिटल म्यूजियम भी बनाया गया है। 50 के स्लॉट में लोगों को संविधान पार्क दिखाएंगे। 2 दिन एंट्री मिलेगी सप्ताह में, इसके लिए ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन होगा। 26 जनवरी को शुरू हुआ था पार्क का काम, 15 अगस्त 2022 तक पूरा होना था। 8.16 करोड़ का बजट था, बढ़कर 9.5 करोड़ रुपए हो गया। संविधान के गठन में योगदान देने वाली विभूतियों की प्रतिमाएं, उनके योगदान व संविधान की संरचना और उसके वास्तविक मूल्यों को शिलालेखों पर उकेरा गया। संविधान की जानकारी का विभिन्न खंडों में विभाजन, प्रतिमाओं व शिलालेखों को वॉक-वे के पास स्थापित कर श्रव्य-दृश्य माध्यम से आकर्षक बनाया गया। महात्मा गांधी की 10 गुणा 12 फीट की चरखा चलाते गन मेटल की मूर्ति लगाई गई है। महाराणा प्रताप की उनके प्रिय घोड़े चेतक के साथ सफेद मार्बल की प्रतिमा स्थापित की गई है।

## चलती बस में धमाके, आग का गोला बनी बस

जोधपुर. एक खड़ी बस में अचानक आग लगने से हड़कंप मच गया। इस दौरान बस स्टैंड पर खड़े यात्री उस समय डर गए, जब लपटों से घिरी बस अपने आप चलने लगी। इस दौरान बस में हुए हल्के धमाकों से लोगों में दहशत फैल गई। जब तक फायर ब्रिगेड मौके पर पहुंची तब तक बस कबाड़ बन गई थी। प्राइवेट बस स्टैंड पर हुए इस हादसे से प्रशासन की लापरवाही भी सामने आई है। मामला जोधपुर शहर के बनाड़ थाना क्षेत्र के कालवी प्याऊ बस स्टॉप का है। बुधवार सुबह 11 बजे हुए हादसे में बस मालिक का कहना है कि आग जानबूझकर लगाई गई है। बस मालिक भवानी सिंह ने बताया कि वह सुबह साढ़े 10 बजे बस को स्टॉप पर खड़ी कर चला गया था। करीब 11 बजकर 5 मिनट पर कॉल आया कि बस में आग लग गई है। जब मौके पर पहुंचा तो देखा कि आग की लपटों ने बस को घेरा हुआ है। भवानी सिंह का कहना था कि बस में शॉर्ट सर्किट होता तो आग आगे की तरफ से लगती। लेकिन बस में आग पीछे की तरफ से लगते हुए आगे की तरफ आई है। ऐसे में किसी ने जान बूझकर बस को आग के हवाले किया है। सिंह ने बताया कि उनकी जिंदगी भर की पूंजी बर्बाद हो गई। हालांकि, अभी तक उन्होंने किसी के खिलाफ मामला दर्ज नहीं करवाया है। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि आग की चिंगारी ने धीरे-धीरे पूरी बस को लपटों में घेर लिया था। कुछ देर बाद आग की वजह से बस रूक-रूक कर आगे चलने लगी। प्रत्यक्षदर्शी अर्जुन सिंह ने बताया कि ऐसा लगा रहा था कि कोई बस में है, लेकिन गियर और आग की वजह से बस आगे की ओर बढ़ती जा रही थी। कुछ देर बाद बस में धमाके होने लगे। कांच फूटने की आवाज आने लगी तो आस-पास मौजूद लोग भी डर गए। सूचना मिलने पर शास्त्री नगर व नागौरी गेट फायर ब्रिगेड से दो गाड़ियां मौके पर पहुंची। सड़क पर फ्लाई ओवर का निर्माण कार्य चलने से आधी सड़क पर टीन का पार्टीशन लगा है। बस वहां अटक कर रुक गई। इसके बाद आसानी से बस पर काबू पाया गया। बस मालिक ने बताया कि उनके बस जोधपुर से बर-बिलाड़ा रूट पर चलती है। सुबह वे एक रूट करके आए थे। साढ़े 11 बजे दोबारा बस को रवाना करने का टाइम था, लेकिन इससे पहले ही हादसा हो गया। फायर ब्रिगेड के कर्मचारी ने बताया कि उन्हें 12 बजे सूचना दी थी। आधे घंटे में पहुंच आग पर काबू पाया। इधर, लोगों का कहना था कि फायर बिग्रेड की टीम ने आने में देरी कर दी। इस वजह से आग बढ़ती गई और पूरी बस जलकर खाक हो गई।

## प्रधानमंत्री मोदी को बताया आधुनिक भारत का राष्ट्रपिता

नई दिल्ली. महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस की पत्नी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को आधुनिक भारत का राष्ट्रपिता बताया है। उनसे जब महात्मा गांधी के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि देश के दो राष्ट्रपिता हैं। अमृता फडणवीस मंगलवार को नागपुर में अभिव्यक्ति वैदर्भीय लेखिका संस्था की ओर से अभिरूप न्यायालय कार्यक्रम में हिस्सा लेने पहुंची थीं। इस दौरान ही उन्होंने यह बयान दिया। अमृता फडणवीस सिर्फ दो राष्ट्रपिता कहकर ही नहीं रुकीं। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी पुराने समय के तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नए भारत के राष्ट्रपिता हैं। बता दें कि 3 महीने पहले भी अमृता फडणवीस ने नरेंद्र मोदी का जिक्र राष्ट्रपिता कह कर किया था। 17 सितंबर को पीएम मोदी के जन्मदिन के मौके पर ट्वीट में फॉदर ऑफ मॉडर्न इंडिया लिखा था। हालांकि इसके बाद उन्होंने यह भी कहा मेरी राजनीति में आने में कोई रुचि नहीं है। मैं राजनीति के काम में अपने 24 घंटे नहीं दे सकती। मेरे पति 24 घंटे समाज के काम के लिए देते हैं, इसलिए जो 24 घंटे राजनीति और समाज के लिए दे सकते हैं, वही राजनीति करने लायक हैं। देवेंद्र जी को मुख्यमंत्री होना चाहिए। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने भी प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात के बाद उन्हें फादर ऑफ इंडिया कहा था। एक औपचारिक मुलाकात के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए ट्रम्प ने कहा था, 'मुझे याद है, भारत पहले कैसा था, वहां फूट थी, मारामारी थी। उन्होंने (पीएम मोदी) ने सबको एक किया, जैसे एक पिता करता है। वो शायद फादर ऑफ इंडिया हैं। हम उनको फादर ऑफ इंडिया कहेंगे।

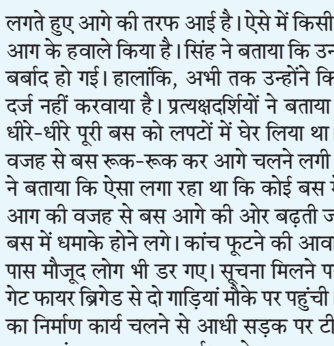

# उत्तर भारत की हवा से बढ़ी ठिठुरन

जयपुर. उत्तर भारत से आ रही हवा ने राजस्थान में ठिठुरन बढ़ा दी है। बुधवार को जयपुर, सीकर, चूरू, नागौर, अजमेर, अलवर आदि जिलों में ठंड बढ़ गई है। ठंडी हवा पर धूप बेअसर रही। इधर, गंगानगर, चूरू, बीकानेर, हनुमानगढ़ में आज सीजन का सबसे घना कोहरा देखने को मिला। इससे विजिबिलिटी काफी कम रही। मौसम केन्द्र जयपुर के अनुसार, आज सबसे कम तापमान 5.2 डिग्री सेल्सियस चूरू में दर्ज हुआ। गंगानगर, बीकानेर, चूरू, हनुमानगढ़ में हाईवे पर सुबह 10 बजे तक हेडलाइट ऑन करके गाड़ियां चलानी पड़ीं। कोहरे और तेज ठंड के कारण आज लोगों की दिनचर्या में भी बदलाव देखने को मिला। लोग सुबह देरी से अपने घरों से निकले तो वहीं जगह-जगह लोग अलाव जलाकर सर्दी से बचने का जतन करते दिखे। जयपुर में हल्की सर्द हवा चलने के साथ ही आसमान में हल्की धुंध भी छायी रही। इससे सुबह सूरज की गर्मी का असर भी कम रहा। जयपुर में मंगलवार रात न्यूनतम तापमान 2 डिग्री सेल्सियस जरूर बढ़ा था, लेकिन सर्दी में कमी नहीं है। अब तक तेज सर्दी की आस देख रहे माउंट आबू के सैलानियों के लिए थोड़ी राहत है। यहां पिछले कई दिनों से तापमान 5 डिग्री सेल्सियस से ऊपर बना हुआ था, जो आज गिरकर 3 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। माउंट आबू के अलावा आज जैसलमेर, गंगानगर, बाड़मेर और सिरोही जिले में भी पारा 2 डिग्री

सेल्सियस तक नीचे आया है। इधर सिरोही, अजमेर, जयपुर, बूंदी, टोंक और बारां में रात का तापमान 2 से 4 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ा है, लेकिन यहां सर्द हवाओं के कारण तापमान बढ़ने के बाद भी सर्दी का असर कम नहीं हुआ। राज्य में इस सीजन सर्दी देरी से आई है। मिड दिसंबर तक सर्दी के तेवर नरम ही रहे। यही कारण रहा कि इस बार दिसंबर में किसी भी जगह पारा माइनस में नहीं गया। फतेहपुर में एक और माउंट आबू में दिन पारा शून्य पर दर्ज हुआ। आज रेगिस्तानी एरिया जैसलमेर, फलौदी, बीकानेर, सिरोही में जरूर थोड़ी सर्दी तेज रही, जिसके कारण इन शहरों में आज सीजन का सबसे कम तापमान रिकॉर्ड हुआ।

## जयपुरिया अस्पताल की ओटी से एडवांस सर्जरी मशीन चोरी

जयपुर. जयपुरिया अस्पताल से चोर ऑपरेशन थिएटर में रखी एडवांस सर्जरी की मशीन चोरी कर ले गए। ओटी में ऑपरेशन के दौरान जब मशीन की आवश्यकता पड़ी तो पता चला कि मशीन गायब है। करीब साढे 14 लाख रुपए की मशीन ओटी से गायब होने पर पूरे अस्पताल में हड़कंप मच गया।

इस पर जयपुरिया अस्पताल के अधीक्षक महेश मंगल के द्वारा बजाज नगर थाने को मशीन चोरी होने की सूचना दी गई। शिकायत मिलने पर जयपुरिया अस्पताल पहुंची बजाज नगर थाना पुलिस ने अस्पताल परिसर में लगे सीसीटीवी कैमरे भी खंगाले। पुलिस को अभी तक कोई सुराग नहीं लगा है। पुलिस ने शिकायत के आधार पर अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ एडवांस सर्जरी मशीन चोरी करने का मुकदमा दर्ज कर लिया है। जयपुरिया अस्पताल के अधीक्षक महेश मंगल ने बताया 8-9 तारीख को उनके पास सूचना आई की मशीन चोरी हो चुकी है। इसके बाद अस्पताल प्रशासन ने अपने स्तर पर मशीन की खोजबीन करना शुरू किया। ओटी के अंदर और ओटी के बाहर लगे सीसीटीवी कैमरा को खंगाला गया, लेकिन अभी तक किसी भी प्रकार का कोई सुराग नहीं लगा है। न ही कोई व्यक्ति मशीन को लाता और ले जाता हुआ दिखाई दे रहा है। मशीन की बाजार कीमत 14 लाख 51 हजार 442 रुपए है। मशीन का नाम हारमोनिक्स डिवाइस है। जयपुरिया अस्पताल में इस तरीके की तीन मशीन है। इनमें से एक मशीन चोरी हो गई है। लाखों रुपए की मशीन चोरी की शिकायत मिलने पर बजाज नगर थाना पुलिस ने अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ चोरी का मुकदमा दर्ज कर लिया है।

# लॉ यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रोफेसर देव स्वरूप ने दिया इस्तीफा

जयपुर. राजस्थान लॉ यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रोफेसर देव स्वरूप ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। मंगलवार को उन्होंने अपना इस्तीफा राज्यपाल कलराज मिश्र को भेजा था। जिसे मिश्र ने तुरंत स्वीकार कर लिया है। बता दें कि देव स्वरूप का कार्यकाल अगले साल फरवरी तक था। ऐसे में अपने खिलाफ योग्यता को लेकर शुरू हुई जांच के बाद देव स्वरूप ने कार्यकाल खत्म होने से 2 महीने पहले ही इस्तीफा देकर सभी को चौंका दिया है। बता दें कि यह दूसरा मौका है जब देव स्वरूप ने कुलपति के पद से इस्तीफा दिया है। साल 2014 में भी वह राजस्थान यूनिवर्सिटी से इस्तीफा दें चुके है। साल 2013 में देवस्वरूप के खिलाफ भर्ती को लेकर आरोप लगे थे। इसके बाद नवम्बर 2014 में विवादों में आने के बाद स्वरूप ने प्रशासनिक काम में सरकार की ओर से सहयोग नहीं मिलने का आरोप लगाते हुए इसतीफा दे दिया

था। डॉ. देव स्वरूप की एलएलबी डिग्री को लेकर लगातार सवाल उठ रहे थे। डॉ. देव स्वरूप पूर्व में जब राजस्थान यूनवर्सिटी के कुलपति थे। तो उन्होंने अपने आवेदन में खुद के पास एलएलबी डिग्री होना बताया था। लेकिन जब उन्होंने डॉ. भीमराव अम्बेडकर विधि विश्वविद्याल के कुलपति पद के लिए आवेदन किया। तो उसमें अपनी एलएलबी डिग्री छुपाई थी। इसे लेकर राजभवन ने 7 जुलाई को जांच कमेटी का गठन किया था। जब कमेटी ने जब जांच शुरू की और डॉ. देव स्वरूप ने उनकी डिग्रियों की जानकारी चाही। तो उन्होंने अपनी डिग्रियों की जानकारी देने से ही मना कर दिया था। इस साल जुलाई में सांसद रामचरण बोहरा और विधायक नरपतसिंह राजवी ने सबसे पहले राजभवन को डॉ. देव स्वरूप की एलएलबी डिग्री को लेकर शिकायत की थी। इसके बाद 7 जुलाई 2022 को राजभवन ने जांच के लिए वर्धमान महावीर ओपन यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. कैलाश सोढाणी की अध्यक्षता में 3 सदस्यीय कमेटी का गठन किया। जिसमें पूर्व वीसी प्रो. पीसी त्रिवेदी और बॉम सदस्य डॉ. संतोष शील को सदस्य बनाया। इस पूरे मामले की बाद कमेटी को 15 दिन में रिपोर्ट देनी थी। लेकिन देवस्वरूप द्वारा सहयोग नहीं करने की वजह से जांच पूरी नहीं हो सकी। इसके बाद राज्यपाल के प्रमुख सचिव सुबीर कुमार ने 16 नवंबर को कमेटी को रिमाइंडर भेजा। जिसमें लिखा कि जल्द से जल्द जांच कर राजभवन को रिपोर्ट भेजें। वहीं राजभवन के आदेश के बाद कमेटी अध्यक्ष डॉ. कैलाश सोढाणी ने 29 नवंबर को डॉ. देव स्वरूप से जानकारी मांगी।

### राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा बुधवार सुबह राजस्थान से हरियाणा में दाखिल हुई

# नेता सड़कों पर चलें, धक्के खाएं:राहुल गांधी

अलवर. राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा बुधवार सुबह राजस्थान से हरियाणा में दाखिल हुई। अलवर से सटे हरियाणा बॉर्डर पर हुए कार्यक्रम में राहुल ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे से कहा राजस्थान में मंत्री महीने में एक बार 15 किलोमीटर पैदल चलते हैं। यह मॉडल हर कांग्रेस शासित राज्य में लागू किया जाए। मेरा सुझाव है कि जहां भी कांग्रेस की सरकार बने हमारी कैबिनेट, मंत्री, विधायकों और नेताओं को महीने में कम से कम एक दिन इन सड़कों पर चलना चाहिए। धक्के खाने चाहिए, गिरना चाहिए, घुटने छिलने चाहिए। राहुल ने कहा यात्रा में बहुत सीखने को मिला है। यात्रा में हम लंबे भाषण नहीं देते। यात्रा छह बजे शुरू होती है, हम छह सात घंटे चलते चलते हैं और फिर 15 मिनट का भाषण देते हैं। आजकल के नेताओं की आदत हो गई है वे चाहे कांग्रेस, बीजेपी, समाजवादी किसी पार्टी के हों, हर पार्टी के नेताओं की बात कर रहा हूं। आजकल नेता और जनता के बीच खाई बन गई है। नेता सोचते हैं कि जनता की बात सुनने की जरूरत नहीं है। घंटों लंबे भाषण देते हैं। इस यात्रा ने इसे बदलने की कोशिश की है। सात आठ घंटे हम चलते हैं और सारे के सारे नेता किसानों, मजदूरों, युवाओं की, छोटे दुकानदारों की बात सुनते हैं। जैसे आज सुबह से मुझ में कोई थकान नहीं है, वैसे ही शाम को मेरा चेहरा देखना, कोई थकान नहीं

होती। यहां राजस्थान के नेता बैठे हैं। अशोक गहलोत, गोविंद डोटासरा, सचिन पायलट, हरीश चौधरी बैठे हैं। इनका चेहरा देखिए। ये 17 दिन रोज 25 किलोमीटर चले हैं, इन्होंने हाफ मैराथन दौड़ी है, लेकिन इनके चेहरों पर कोई थकान नहीं है। हम अपनी शक्ति से नहीं आपकी मोहब्बत और शक्ति से चल रहे हैं। आपने पूरी शक्ति डाल दी। अभी भाषण में किसी ने कहा कि मैं देश का तपस्वी हूं। कन्याकुमारी से पैदल चलकर मैंने कोई बड़ा काम नहीं किया है। इस देश में मुझसे बड़े करोड़ों तपस्वी हर रोज चार बजे उठकर खेतों में काम करते हैं। सड़कों पर पूरी जिंदगी चलते हैं। राहुल ने मालाखेड़ा की सभा की बात को फिर दोहराते हुए कहा कि बीजेपी के नेताओं ने पूछा यात्रा की क्या जरूरत है? क्या जरूरत है कन्याकुमारी से कश्मीर चलने की। आपके नफरत के बाजार में मोहब्बत की दुकान खोल रहे हैं। जब भी ये लोग इस देश में नफरत फैलाने निकलते हैं, हमारी विचारधारा के लोग मोहब्बत फैलाना शुरू करते हैं। यह लड़ाई नई नहीं है, यह लड़ाई हजारों साल पुरानी है। इसमें दो विचारधाराएं चलती आ रही हैं। एक विचारधारा जो चुनिंदा है लोगों को फायदा पहुंचाती है और पहुंचाती थी। दूसरी विचारधारा जनता की आवाज है। किसान, मजदूर की आवाज है, उसकी विचारधारा है।

## सम्पादकीय

### विकास के मोर्चे पर अमेरिका-चीन की नकल नहीं करे भारत, अन्यथा बढ़ेंगी उलझनें

कहना न होगा कि भारतीय अर्थव्यवस्था भी वैश्विक अर्थव्यवस्था की परछाईं मात्र है। इसलिए दुनियावी प्रभाव से वह अछूती नहीं रह सकती। दुनिया में मची हथियारों की होड़ से वह भी बुरी तरह से प्रभावित है। वहीं हिंदुत्व को इस्लाम और ईसाईयत दोनों से खतरा है।भारत में बढ़ती महंगाई और बेरोजगारी से आमलोग ही नहीं, बल्कि देश के प्रमुख रणनीतिकारों में एक समझे जाने वाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के प्रमुख मोहन भागवत भी परेशान हैं। इसलिए जहां एक ओर विकास की समसामयिक दृष्टि पर ही उन्होंने सवाल उठा दिया है, वहीं दूसरी ओर उसका निर्णायक हल भी बता दिया है, यदि कोई उसकी गहराई में जाये, देखे-परखे तो। संभवतया भारत के सोने की चिड़ियां होने और यहां पर दूध की नदियां बहने का राज भी यही था। इसलिए अब यह मौजूदा मोदी सरकार और उनके मातहत चल रही विभिन्न राज्य सरकारों पर निर्भर है कि वह संघ प्रमुख की सोच को साकार करती हैं या फिर अन्य राजनीतिक बयानबाजियों की तरह ही उनकी दूरदर्शिता भरी सामाजिक बयानबाजी को भी निरर्थक साबित होने के लिए समय-प्रवाह पर सबकुछ छोड़ देती हैं।

यहां पर यह कहना गलत नहीं होगा कि देश की मौजूदा नरेंद्र मोदी सरकार के स्वप्नद्रष्टा और नीतिनियन्ता भी वही हैं, जो सामने से नहीं बल्कि पर्दे के पीछे से अपनी महती भूमिका अदा करते आए हैं। एक तरह से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी उनकी ही पसंद के हैं। यह अलग बात है कि पीएम नरेंद्र मोदी ने अब अपना सियासी कद उनके सामाजिक कद से कई गुणा ज्यादा बढ़ा लिया है, इसलिए उनकी हर बात को मानने के लिए वह बाध्य भी नहीं हैं। यही नहीं, पीएम मोदी ने अपने दायित्वों के अनुरूप खुद में भी बड़ा बदलाव लाया है, ताकि दुनिया के सर्वाधिक शक्तिशाली नेताओं की कतार में मजबूती से खड़ा रह सकें। यही वजह है कि मोहन भागवत को यह बात सार्वजनिक तौर पर कहनी पड़ी, ताकि सरकार उसपर गंभीर रुख अख्तियार करे।

इस बात में कोई दो राय नहीं कि एक प्रधानमंत्री के रूप में उनके द्वारा हासिल की गई विभिन्न सफलताओं का अपना महत्व है। हालांकि, देश में बढ़ती महंगाई और बेरोजगारी के चलते उनकी ये सफलताएं गौण होती जा रही हैं। इसलिए लोगों को हिंदुत्व, राष्ट्रवाद और विकास की घूंटी पिलाना उनकी राजनीतिक मजबूरी है, ताकि महंगाई व बेरोजगारी से हांफती अवाम उनके खिलाफ मुखर न हो जाये। वैसे तो एक प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने भी अपने पूर्ववर्ती प्रधानमंत्रियों द्वारा अग्रसारित देश की नई आर्थिक नीतियों को ही आगे बढ़ाया है, इसलिए जनअसंतोष की संभावना हाल-फिलहाल नहीं है। लेकिन भय, भूख और भ्रष्टाचार को मिटाने में पूरी तरह से विफल रही मौजूदा सरकार आखिर कब तक खैर मनाएगी। यह बात अलग है कि मेक इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत का जो दृष्टिकोण उन्होंने दिया है, वे काफी महत्व की हैं और लोगों को लुभा भी रही हैं।

कहना न होगा कि भारतीय अर्थव्यवस्था भी वैश्विक अर्थव्यवस्था की परछाईं मात्र है। इसलिए दुनियावी प्रभाव से वह अछूती नहीं रह सकती। दुनिया में मची हथियारों की होड़ से वह भी बुरी तरह से प्रभावित है।

# भगवान पार्श्वनाथ: पुरुषार्थ से भाग्य बदलने का सूत्र दिया

जैन धर्म के तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का जन्मोत्सव 18 दिसम्बर 2022 को मनाया जायेगा। तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म आज से लगभग 3 हजार वर्ष पूर्व वाराणसी में हुआ था। वाराणसी में अश्वसेन नाम के इक्ष्वाकुवंशीय राजा थे। उनकी रानी वामा ने पौष कृष्ण एकादशी के दिन महातेजस्वी पुत्र को जन्म दिया, जिसके शरीर पर सर्पचिह्न था। वामा देवी ने गर्भकाल में एक बार स्वप्न में एक सर्प देखा था, इसलिए पुत्र का नाम ह्यपार्श्वह्ल रखा गया। राजा अश्वसेन वाराणसी के राजा थे। जैन पुराणों के अनुसार तीर्थंकर बनने के लिए पार्श्वनाथ को पूरे नौ जन्म लेने पड़े थे। पूर्व जन्म के संचित पुण्यों और दसवें जन्म के तप के फलतः ही वे तेईसवें तीर्थंकर बने।

भगवान पार्श्वनाथ अज्ञान-अंधकार-आडम्बर एवं क्रियाकाण्ड के मध्य में क्रांति का बीज बन कर पृथ्वी पर जन्मे। तब तापस परम्परा में वे क्रांति-ज्वाला की तरह ऐसे प्रकट हुए, जैसे वर्षों तप में लीन रहने के बाद सहसा ज्ञान का तीसरा नेत्र खुल जाता है। उनका जीवन जहां तापस युग का अंत था तो दूसरे बौद्धिक साधना का प्रारम्भ। उनका प्रारंभिक जीवन राजकुमार के रूप में व्यतीत हुआ। पार्श्व प्रभु ने उपदेश दिया कि यदि धर्म इस जन्म में शांति और सुख नहीं देता है तो उससे पारलौकिक शांति की कल्पना व्यर्थ है। उन्होंने हमारी आस्था को नये आयाम दिये और कहा कि हमारे भीतर अनंत शक्ति है, असीम क्षमता है। इसलिए उन्होंने उपासनापरक और क्रियाकाण्डयुक्त धर्म को महत्व न देकर जीवंत धर्म की प्रतिस्थापना की। उन्होंने जिस धर्म का उपदेश दिया, वह न ब्राह्मण धर्म था, न क्षत्रिय धर्म, न वैश्य धर्म और न ही शूद्र धर्म। वह विशुद्ध धर्म था, जो किसी कुल, जाति या वर्ण की परिधि में सिमटा नहीं था।

पुराणों के अनुसार पहले जन्म में वे मरुभूमि नामक ब्राह्मण बने, दूसरे जन्म में वज्रघोष नामक हाथी, तीसरे जन्म में स्वर्ग के देवता, चौथे जन्म में रश्मिवेग नामक राजा, पांचवें जन्म में देव, छठे जन्म में वज्रनाभि नामक चक्रवर्ती सम्राट, सातवें जन्म में देवता, आठवें जन्म में आनंद नामक राजा, नौवें जन्म में स्वर्ग के राजा इन्द्र और दसवें जन्म में तीर्थंकर बने। बचपन में पार्श्वनाथ का जीवन राजसी वैभव और ठाटबाठ में व्यतीत हुआ। जब उनकी उम्र सोलह वर्ष की हुई और वे एक दिन वन भ्रमण कर रहे थे, तभी उनकी दृष्टि एक तपस्वी पर पड़ी, जो कुल्हाड़ी से एक वृक्ष पर प्रहार कर रहा था। यह दृश्य देखकर पार्श्वनाथ सहज ही चीख उठे और बोले - ह्यठहरो! उन निरीह जीवों को मत मारो।ह्ल उस तपस्वी का नाम महीपाल था। अपनी पत्नी की मृत्यु के दुख में वह साधु बन गया था। वह क्रोध से पार्श्वनाथ की ओर पलटा और कहा- मैं किसे मार रहा हूं? देखते नहीं, मैं तो तप के लिए लकड़ी काट रहा हूं।

पार्श्वनाथ ने व्यथित स्वर में कहा- लेकिन उस वृक्ष पर नाग-नागिन का जोड़ा है। महीपाल ने तिरस्कारपूर्वक कहा- तू क्या त्रिकालदर्शी है? और पुनः वृक्ष पर वार करने लगा। तभी वृक्ष के चिरे तने से छटपटाता, रक्त से नहाया हुआ नाग-नागिन का एक जोड़ा बाहर निकला। एक बार तो क्रोधित महीपाल उन्हें देखकर कांप उठा, लेकिन अगले ही पल वह धूर्ततापूर्वक हंसने लगा। तभी पार्श्वनाथ ने नाग-नागिन को णमोकार मंत्र सुनाया, जिससे उनकी मृत्यु की पीड़ा शांत हो गई और अगले जन्म में वे नाग जाति के इन्द्र-इन्द्राणी धरणेन्द्र और पद्मावती बने और मरणोपरांत महीपाल सम्बर नामक दुष्ट देव के रूप में जन्मा। इस घटना ने पार्श्वनाथ की जीवन दिशा ही बदल दी और उनकी संसार के जीवन-मृत्यु से विरक्ति हो गई। उन्होंने ऐसा कुछ करने की ठानी जिससे जीवन-मृत्यु के बंधन से हमेशा के लिए मुक्ति मिल सके। वे सत्योपलब्धि की साधना में जुटें और जन-जन को रोशनी बांटी। तब पार्श्व ने कहा- ह्यदयाहीनह्ल धर्म किसी काम का नहीं।

बचपन से ही पार्श्वनाथ चिंतनशील और दयालु थे। पार्श्व युवा हुए। इनका क्षत्रियत्व शौर्यशाली था। सभी विद्याओं में ये प्रवीण थे। एक बार

अपने मामा की सहायता के लिए युद्ध किया। आक्रामक को इन्होंने परास्त कर, उसे बंदी बना अपने शौर्य का परिचय दिया। उन्होंने अपने समय की हिंसक स्थितियों को नियंत्रित कर अहिंसा का प्रकाश फैलाया। यूं लगता है पार्श्वनाथ जीवन दर्शन के पुरोधा बनकर आये थे। उनका अतः से इति तक का पूरा सफर पुरुषार्थ एवं धर्म की प्रेरणा है। वे सम्राट से संन्यासी बने, वर्षों तक दीर्घ तप तपा, कर्म निर्जरा की, तीर्थंकर बने। जैन दर्शन के रूप में शाश्वत सत्यों का उद्घाटन किया। उनका संपूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व जैन इतिहास का एक अमिट आलेख बन चुका है।

पार्श्वनाथ ने संसार और संन्यास दोनों को जीया। वे पदार्थ छोड़ परमार्थ की यात्रा पर निकल पड़े। उन्होंने जीवन शुद्धि के लिए कठोर तप किया। उनके तप में सादगी थी और जीवन शुद्धि का मर्म था। वास्तव में तप वही है जिसके साथ न प्रदर्शन जुड़ा है और न प्रलोभन। इसमें न केवल उपदेश काम करता है और न अनुकरण। जीवन स्वयं एक तपस्या है। सुविधाओं के बीच सीमाकरण में रहना और अभावों के बीच तृप्ति को पा लेना भी तप है। प्रतिकूलताओं को समत्व से सह लेना, वैचारिक संघर्ष में सही समाधान पा लेना, इन्द्रियों को विवेकी बना लेना, मन की दिशा और दृष्टि को बदल देना भी तप है और ऐसे ही तप के माध्यम से पार्श्वनाथ न केवल स्वयं तीर्थंकर बने बल्कि जन-जन में ऐसी ही पात्रता को उन्होंने विकसित किया। उनकी साधना की कसौटी थी- शुद्ध आत्मा में धर्म का स्थिरीकरण। बिना पवित्रता धर्म आचरण नहीं बन सकता। जैसे- मुखौटों में सच नहीं छिपता, वैसे ही वासनाएं, कामनाएं, असत संस्कार और असत व्यवहार धर्म को आवरण नहीं बना सकता। इसलिए उपासना के इस बिन्दु से जोड़े कि धर्म मंदिर या पूजा पाठ में नहीं, धर्म मन के मंदिर में हैं।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ ने अहिंसा का दर्शन दिया। अहिंसा सबके जीने का अधिकार है, उन्होंने इसे स्वीकृत किया। प्राचीन उद्घोष एक बार फिर से करते हुए उन्होंने जनता को संदेश दिया- ह्यसव्वे पाणा पियाउवा, सव्वे दुक्ख पडिकुलाह्ल- यानी सबको जीवन प्रिय है, दुख को कोई नहीं चाहता। पर हमने अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर प्रकृति पदार्थ, प्राणी और पर्यावरण को नकार दिया। पार्श्वनाथ भी उन धर्मनायकों एवं तीर्थंकरों में से ऐसे महापुरुष थे, जो धर्म नीतियों का प्रकाश संसार में लेकर आए और ऐसे जीवन मूल्यों की स्थापना की जिनके माध्यम से धर्म एक नये रूप में प्रस्तुत हुआ। इस धर्म दर्शन में जीवन के इर्द-गिर्द छिपी बाहरी ही नहीं, भीतरी परछाइयां भी रोशनी बनकर प्रस्तुत होती है। अच्छाइयों की सही पहचान होती है, अहिंसक मन कभी किसी के सुख में व्यवधान नहीं बनता।

भगवान पार्श्वनाथ हमारे लिए वंदनीय है। वे हमारे जीवन दर्शन के स्रोत हैं, प्रेरक आदर्श हैं। उन्होंने जैसा जीवन जीया, उसका हर अनुभव हमारे लिए साधना का प्रयोग बन गया। उन्होंने हमारे भीतर सुलभ बोधि जगाई, व्रत की संस्कृति विकसित की। बुराइयों का परिष्कार कर अच्छा इंसान बनने का संस्कार भरा। पुरुषार्थ से भाग्य बदलने का सूत्र दिया। क्योंकि हम कुछ होना चाहें और पुरुषार्थ न करें तो फिर बिना लंगर खोले रात भर नौका खेने वाले नादान मल्लाह की तरह असफलता हाथ आएगी। इसलिए उन्होंने कर्मवीर बनने का संदेश दिया।

भगवान पार्श्वनाथ हमारे लिए वंदनीय है। वे हमारे जीवन दर्शन के स्रोत हैं, प्रेरक आदर्श हैं। उन्होंने जैसा जीवन जीया, उसका हर अनुभव हमारे लिए साधना का प्रयोग बन गया। उन्होंने हमारे भीतर सुलभ बोधि जगाई, व्रत की संस्कृति विकसित की। बुराइयों का परिष्कार कर अच्छा इंसान बनने का संस्कार भरा। पुरुषार्थ से भाग्य बदलने का सूत्र दिया। क्योंकि हम कुछ होना चाहें और पुरुषार्थ न करें तो फिर बिना लंगर खोले रात भर नौका खेने वाले नादान मल्लाह की तरह असफलता हाथ आएगी। इसलिए उन्होंने कर्मवीर बनने का संदेश दिया।

भगवान पार्श्वनाथ ने लगभग 70 वर्ष तक जनता को आलोक बांटा। 100 वर्ष की आयु में एक मास का अनशन करते हुए सम्मेद शिखर पर श्रवण शुक्ल अष्टमी को उन्होंने निर्वाण प्राप्त किया। उनके जन्मदिवस के अवसर पर जरूरत है हम ऐसा संकल्प ले कि भगवान पार्श्वनाथ को सिर्फ शास्त्रों में ही न पढ़ें, प्रवचनों में ही न सुनें बल्कि पढ़ी और सुनी हुई ज्ञान-राशि को जीवन में उतारें तभी एक महाप्रकाश को अपने भीतर उतरते हुए देखेंगे। हम स्वयं पार्श्वनाथ बनने की तैयारी करें।

## 31 मार्च 2023 तक दोगुना हो राजस्व मामलों का निस्तारण

जयपुर। जिला कलक्टर प्रकाश राजपुरोहित ने कहा कि राजस्व अधिकारी राजस्व वादों का निस्तारण प्राथमिकता से करते हुए 31 मार्च 2023 तक दोगुना राजस्व मामलों का निस्तारण करते हुए कुल लंबित राजस्व मामलों में 2 हजार वादों की कमी करना सुनिश्चित करें, इसके लिए सभी राजस्व अधिकारी हर सप्ताह 5 दिन राजस्व न्यायालय में सुनवाई करें और न्यायालय में सुनवाई के समय में भी वृद्धि करें। जिला कलक्टर ने बुधवार को कलक्ट्रेट सभागार में आयोजित राजस्व अधिकारियों की बैठक के दौरान यह बात कही। उन्होंने कहा कि विगत 4 सालों में राजस्व मामलों के निस्तारण का औसत करीब 700 प्रतिमाह था जो कि विगत 4 माह में यह औसत बढ़कर 1282 हो गया है। 1 अगस्त 2022 से 30 नवंबर 2022 तक कुल 4360 राजस्व मामले दर्ज हुए हैं कुल 5130 वादों का निस्तारण किया गया है। बैठक में कलक्टर ने भू-आवंटन, भू-रूपान्तरण, नामान्तरण एवं औद्योगिक प्रयोजनार्थ भू-संपरिवर्तन सहित सभी तरह के लम्बित राजस्व प्रकरणों की समीक्षा की। इसके साथ ही बेहतर प्रदर्शन करने वाले अधिकारियों की सराहना की और अन्य अधिकारियों को प्रकरणों को प्राथमिकता से निस्तारण करने के निर्देश दिये। उन्होंने लम्बित प्रकरणों का निस्तारण उपखण्डस्तर पर ही करने के निर्देश दिए ताकि परिवादी को फरियाद लेकर कलक्ट्रेट ना आना पड़े। वहीं, उन्होंने कहा कि रास्ता खुलवाने वाले प्रकरणों में तत्काल मौके पर टीम भेजकर रास्ता खुलवाने की कार्यवाही की जाए, इसमें किसी भी तरह की ढिलाई नहीं बरती जाए। साथ ही, कलेक्टर ने कहा कि उपखण्ड अधिकारी और तहसीलदार जाकर मौका रकबा कर निरीक्षण की दिनांक जारी करें। बैठक में कलक्टर ने मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना के तहत शत-प्रतिशत कवरेज सुनिश्चित करने के लिए अधिकारियों को विशेष प्रयास का निर्देश दिए। बैठक में एडीएम (प्रथम) दिनेश कुमार शर्मा, एडीएम (तृतीय) अशोक कुमार शर्मा सहित जिले के सभी राजस्व अधिकारी मौजूद रहे।

## कंपनी नियमों में संशोधन कर निदेशक मंडल में एससी-एसटी-ओबीसी वर्ग को मिले प्रतिनिधित्व

जयपुर। राज्य सभा सांसद नीरज डांगी ने निजीकरण के युग में कंपनी नियमों में संशोधन कर, निदेशक मंडल में एससी-एसटी-ओबीसी वर्ग का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के संबंध में राज्य सभा में विशेष उल्लेख के जरिए चर्चा करते हुए सदन को अवगत कराया कि कार्पोरेटगवर्नेंस का किसी संगठन के कार्यो को नियंत्रित और निर्देशित करने के लिए उपयोग किया जाता है। अच्छे कार्पोरेट गवर्नेंस को सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी उसके निदेशक मंडल पर होती है। उन्होंने मांग की है कि कंपनी नियमों में आवश्यक संशोधन किया जाकर एससी, एसटी और ओबीसी वर्ग को प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए। डांगी ने सदन में कहा कि सरकार द्वारा कार्पोरेट बोर्ड रूम में महिलाओं का उचित प्रतिनिधित्व करने के लिए कंपनी (निदेशकों की नियुक्ति और योग्यता) नियम, 2014 के नियम-3 बनाकर यह सुनिश्चित किया है कि प्रत्येक सूचीबद्ध कंपनी या कोई अन्य सार्वजनिक कंपनी, जिसके पास शेयर पूंजी या 300 करोड़ का कारोबार है, उसमें कम से कम एक महिला निदेशक और इसी तरह एक स्वतंत्र निदेशक की नियुक्ति अनिवार्य रूप से करेगी। सरकार द्वारा करपोरेट बोर्ड रूम में महिलाओं का उचित प्रतिनिधित्व करने के लिए ?सा कदम इसलिए उठाया गया था, क्योंकि महिलाओं की आबादी, कुल आबादी का लगभग 50 प्रतिशत हैं। डांगी ने सदन में कहा कि ?से में प्रश्न उठता है कि सरकार द्वारा एससी-एसटी-ओबीसी के लिए समान प्रावधान क्यों नहीं किया जा सकता है, जो देश की आबादी का लगभग 85 प्रतिशत होने के बावजूद भी किसी भी कम्पनी के निदेशक मंडल में उनका प्रतिनिधित्व नगण्य हैं। सांसद ने कहा कि एससी-एसटी-ओबीसी समुदाय ने शायद ही कभी किसी बोर्ड रूम में प्रवेश किया होगा। यह रणनीति न केवल प्राईवेट लिमिटेड कम्पनी अपितु अधिकांश सार्वजनिक उपक्रमों में अपनाई गई है और एससी-एसटी-ओबीसी का उच्च स्तर पर उचित प्रतिनिधित्व नहीं है। सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में अनुसूचित जाति-अनुसूचित जनजाति-ओबीसी के इस व्यवस्थित उत्पीड़न ने न केवल उनका मनोबल गिराया है। हाल ही में संसदीय स्थायी समिति ने इस बात पर नाराजगी व्यक्त की है कि अधिकांश सार्वजनिक उपक्रमों के निदेशक मंडल में उनके हितों की पर्याप्त रूप से रक्षा करने के लिए कोई अनुसूचित जाति या अनुसूचित जनजाति का सदस्य नहीं है। सांसद नीरज डांगी ने बताया कि इस तरह निजी क्षेत्र, कार्पोरेट क्षेत्र के उपक्रमों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों में सामाजिक जिम्मेदारी और संवैधानिक जवाबदेही को लागू करने हेतु कंपनियों में प्रबंधकीय भूमिका निभाने वाले एससी-एसटी-ओबीसी की भागीदारी और प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने हेतु कम्पनी कानून/नियमों में संशोधन की महत्ती आवश्यकता है।

## मुख्यमंत्री पुनर्वास गृह योजना के लिए 28.23 करोड़ रूपए की मंजूरी

जयपुर। राज्य सरकार प्रदेश के बेघर, वृद्धजन, कामकाजी महिलाओं एवं असहाय/निराश्रित व्यक्तियों के समुचित आवास के लिए निरंतर प्रयासरत है। इसी क्रम में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने मुख्यमंत्री पुनर्वास गृह योजना के लिए 28 करोड़ 23 लाख रूपए के वित्तीय प्रावधान को स्वीकृति दी है। प्रस्ताव के अनुसार, विभागीय भवन निर्मित होने तक गृहों का संचालन उपलब्ध राजकीय भवनों तथा राजकीय भवनों की अनुपलब्धता की स्थिति में किराए के भवनों में किया जाएगा। गहलोत की इस स्वीकृति से मुख्यमंत्री पुनर्वास गृहों का वृहद् निर्माण कार्य किए जाने के साथ-साथ आवासीय भवनों के लिए कपड़े, बिस्तर एवं खाद्य सामग्री का क्रय किया जाएगा। इस राशि का उपयोग किराया, कर दर, रायल्टियां एवं सहायतार्थ अनुदान में भी किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि मुख्यमंत्री ने वर्ष 2022-23 के बजट में 75-75 आवासीय क्षमता के 45 मुख्यमंत्री पुनर्वास गृहों को स्थापित किए जाने की घोषणा की थी। इस घोषणा के क्रम में यह वित्तीय स्वीकृति दी गई है।

# गणित के जादूगर थे रामानुजन

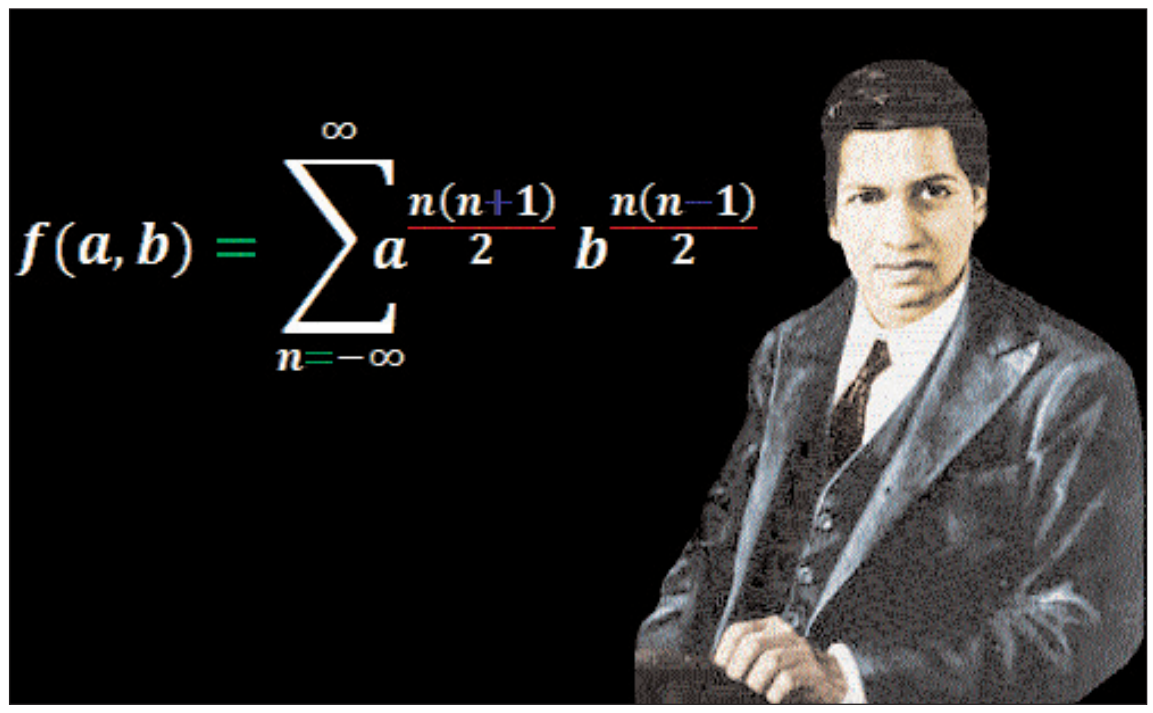


राष्ट्रीय गणित दिवस देशभर में 22 दिसंबर को महान गणितज्ञ श्रीनिवास अयंगर रामानुजन की याद में मनाया जाता है। यह दिन देश के महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन को समर्पित है जिनका जन्म 22 दिसंबर, 1887 को तमिलनाडु राज्य के इरोड नामक स्थान पर हुआ था। रामानुजन को आधुनिक काल के महान गणित विचारकों में गिना जाता है। उन्होंने अपने जीवनकाल में गणित के विश्लेषण एवं संख्या सिद्धांत के क्षेत्रों में गहन योगदान दिया। रामानुजन को गणित में कोई विशेष प्रशिक्षण नहीं मिला था इसके बावजूद इन्होंने अपनी प्रतिभा और लगन से ना केवल गणित के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किए अपितु भारत को वैश्विक स्तर पर गौरव प्रदान कराने का भी काम किया था। राष्ट्रीय गणित दिवस को मनाने का उद्देश्य लोगों में गणित के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। भारत और गणित का रिश्ता बहुत अटूट रहा है। माना जाता है भारत ही वह देश है जिसने पूरी दुनिया को गणित के सबसे महत्वपूर्ण अंक ह्यशून्यह्ल, नकारात्मक संख्या, दशमलव प्रणाली, बीजगणित, त्रिकोणमिति जैसे विषयों से अवगत कराया था। ऐसा देखा गया है हमारी आज की युवा पीढ़ी गणित के नाम से अपने पैर पीछे खींच लेती है। हम अपना हर छोटा मोटा हिसाब आजकल मोबाइल पर करने लगे है। आज भी पुरानी पीढ़ी के लोग जोड़ बाकी अँगुलियों पर करते है और नयी पीढ़ी के युवा मोबाइल का सहारा लेती है। नयी तकनीक ने हालाँकि गणित को हल करने में सरलता करदी है। इसके बावजूद गणित के प्रति हमारा रवैया सकारात्मक नहीं है। लोगों में गणित के प्रति जागरूकता और उत्साह उत्पन्न करने के लिए इस दिवस को मानते है। इस दिन गणित के शिक्षकों और छात्रों को इस विषय को आसान बनाने और लोगों के बीच इसकी लोकप्रियता बढ़ाने के लिए ट्रेनिंग दी जाती है। देश के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 22 दिसंबर 2012 को चेन्नई में महान गणितज्ञ श्रीनिवास अयंगर रामानुजन की 125वीं वर्षगाठ के मौके पर आयोजित एक कार्यक्रम में श्रीनिवास रामानुजन को श्रद्धांजलि देते हुए वर्ष 2012 को राष्ट्रीय गणित वर्ष और साथ ही उनके जन्मदिनके अवसर पर 22 दिसंबर को राष्ट्रीय गणित दिवस घोषित किया। तभी से 22 दिसंबर को हर साल राष्ट्रीय गणित दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर शिक्षण संस्थाओं में विभिन्न आयोजनों के माध्यम से रामानुजन को याद किया जाता है और गणित के महत्त्व की जानकारी दी जाती है। रामानुजन को बचपन से ही गणित में काफी रूचि थी। उन्होंने किसी भी तरह की कोई औपचारिक शिक्षा नहीं ली थी लेकिन उन्होंने अपने जीवन में ऐसी-ऐसी खोजें कीं कि बड़े-बड़े गणितज्ञ हतप्रभ रह गए। रामानुजन ने 12 साल की उम्र में त्रिकोणमिति में महारत हासिल कर ली थी और बिना किसी की सहायता के खुद से कई प्रमेय भी विकसित किए। उनका यह कार्य ऐतिहासिक माना गया था। रामानुजन की प्रतिभा का पता इसी से लगाया जा सकता है कि जब वह सातवीं कक्षा में पढ़ते थे तो उसी समय ये बी. ए. के छात्रों को गणित पढ़ाया करते थे। लोनी के द्वारा प्रसिद्ध त्रिकोणमिति जिसे हल करने में बड़े-बड़े गणितज्ञ असफल हो जाया करते थे, मगर इन्होंने अपनी मात्र 13 वर्ष की अल्पायु में ही हल करके अपनी प्रतिभा को प्रमाणित कर दिया था। उनके बारे में यह कहा जाता था कि वे गणित के किसी भी प्रश्न को सबसे अधिक तरीके से हल कर सकते थे। उनकी इसी विलक्षण प्रतिभा ने इनको विश्व में गणित का गुरु होने का दर्जा दिलाया था। गणित के क्षेत्र में किये गए कार्यों की वजह से इनका नाम इतिहास के पन्नों में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित किया गया है। इन्होंने अपने कार्यों के द्वारा भारत के सम्मान में भी चार चाँद लगाया। टीबी की बीमारी की वजह से रामानुजन का 32 साल की उम्र में उनका निधन हो गया।

### राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने कहा

# पारम्परिक खेती के ज्ञान के साथ अपनाने होंगे नवाचार

जयपुर। राज्यपाल एवं कुलाधिपति कलराज मिश्र ने कहा है कि खेती के पारम्परिक तरीकों के साथ कृषि विज्ञान की हमारी वैदिक परम्परा पर वृहद स्तर पर चिंतन किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के कृषि वैज्ञानिक ?से उपाय सुझाएं जिससे खेत-खलिहानों में समृद्धि की बयार आए। उन्होंने प्राचीन कृषि संस्कृति को सहेजने की जरूरत भी बताई। कुलाधिपति बुधवार को उदयपुर के महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के 16 वें दीक्षांत समारोह में विवेकानंद सभागार में संबोधित कर रहे थे। कुलाधिपति ने योग्य छात्र छात्राओं को उपाधि एवं स्वर्ण पदक प्रदान किये। मिश्र ने वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप को नमन भी किया। राज्यपाल ने कहा कि कृषि एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में यह विश्वविद्यालय शोध और शिक्षा में देश का प्रमुख केन्द्र बने, इसके लिए जरूरी है कि नवाचार अपनाते हुए ?से विषयों पर विश्वविद्यालय ध्यान दें जिससे खेतों में उन्नत पैदावार हो तथा स्थानीय जलवायु के अनुसार खेती आगे बढ़े। राज्यपाल मिश्र ने कहा कि कृषि क्षेत्र में पिछले कुछ वर्षों के दौरान पैदावार में वृद्धि हुई है परन्तु मिट्टी की उर्वरा शक्ति क्षीण हुई है, खेती का क्षेत्र घटने लगा है। इसके साथ ही और भी बहुत सारी समस्याएं कृषि क्षेत्र में उत्पन्न हुई है। राज्यपाल ने कहा कि वे चाहते हैं कि महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय इन समस्याओं के प्रभावी समाधान हेतु नई तकनीकों के उपयोग के साथ ही ?से शोध विकसित करें जिससे मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़े, विभिन्न प्रकार की फसलों का उत्पादन हो साथ ही खेती में रासायनिक उर्वरकों का कम से कम उपयोग हो। उन्होंने कहा कि कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी व खाद्य सुरक्षा के अंतर्गत हमें अब बहु-आयामी रणनीति अपनानी होगी। जिसके अंतर्गत खाद्य उत्पादन के साथ ही उनके भंडारण, खाद्य प्रसंस्करण, जरूरतमंदों के लिए विषिष्ट उत्पादन कर उन तक प्रभावी रूप में पोषण पहुंचाने की दिशा में भी

कार्य करने होंगे। जलवायु परिवर्तन तथा ग्लोबल वार्मिंग इस समय की सबसे बड़ी समस्याएं हैं। उन्होने कहा कि कृषि एवं प्रौद्योगिकी के जरिए बहुत बड़े स्तर पर समाज में परिवर्तन किया जा सकता है और महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय यह कार्य बखूबी कर रहा है। इस विश्वविद्यालय ने भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् की रैंकिंग में प्रदेश में प्रथम और समूचे देश मे 15वाँ स्थान प्राप्त किया है और इसके लिए उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलपति एवं पूरे परिवार को बधाई दी। उन्होंने कहा कि समय संदर्भों के साथ कृषि तकनीकी क्षेत्र में विशेषज्ञ पाठ्यक्रमों एवं समन्वित शोध की शुरूआत हो, जिनसे युवा वर्ग कृषि क्षेत्र की वैश्विक और पर्यावरण संरक्षण की चुनौतियों का सामना कर सके। राज्यपाल ने विद्यार्थियों के स्टार्ट अप, कैंपस प्लेसमेंट अखिल भारतीय शोध परियोजनाओं, मक्का, मशरूम और फूलों की नयी किस्मों के विकास, डिजिटल टेक्नोलॉजी के विकास, कृषि ड्रोन और हुमनोइड रोबोट की स्थापना, बीजोत्पादन, मत्स्य पालन, प्रताप धन मुर्गी उत्पादन, कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा प्रदेश के सात जिलों में और आदर्श ग्राम में किये जा रहे कृषि प्रसार कार्यों, विश्वविद्यालय के राजस्व में बढ़ोत्तरी, कृषक महिलाओं, ग्रामीण युवाओं व फैकल्टी के कौशल विकास की बात कही। कुलपति डॉ अजीत कुमार कर्नाटक ने विश्वविद्यालय प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। पूर्व कुलपति एमपीयूएटी तथा पूर्व उप महानिदेशक (कृषि शिक्षा) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली डॉ. एस. एल. मेहता ने दीक्षांत उद्बोधन दिया। कार्यक्रम में राज्यपाल ने सर्वप्रथम संविधान की उद्देशिका एवं मूल कर्तव्यों का वाचन किया। आरंभ में उदयपुर जिला कलक्टर ताराचंद मीणा व जिला पुलिस अधीक्षक विकास शर्मा ने राज्यपाल मिश्र की अगवानी की।

## राजकीय महाविद्यालय कठूमर में आशु भाषण प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

मरुधर विशेष दिनेश लेखी

कठूमर। राजकीय महाविद्यालय कठूमर के प्रोफेसर सुरेंद्र कुमार ने बताया कि कार्यवाहक प्राचार्य विष्णु कुमार के सानिध्य में महाविद्यालय परिसर में 19 से 24 दिसंबर तक विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। प्रदेश में सरकार के कार्यकाल के 4 वर्ष पूर्ण होने पर प्रदेश में चलाई जा रही जनकल्याणकारी विविध फ्लैगशिप योजनाओं के संबंध में विद्यार्थियों के माध्यम से समाज में जागरूकता लाने के लिए बुधवार को महाविद्यालय में एक मिनट की आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।आशु भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान बीए तृतीय वर्ष के छात्र दीपक कोली, द्वितीय स्थान बीए तृतीय वर्ष की छात्रा आकांक्षा कौशिक और तृतीय स्थान द्वितीय वर्ष की छात्रा अंजू कुमारी ने प्राप्त किया। निर्णायक की भूमिका का निर्वाह संकाय सदस्य देशराज गुर्जर, डॉ. सुरेंद्र कुमार मीणा और डॉ. रामसिंह ने किया। इस प्रतियोगिता में महाविद्यालय के समस्त विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। और 22 दिसंबर 2022 को राज्य सरकार की फ्लैगशिप योजनाओं से संबंधित दो मिनट की आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन करवाया जाएगा।

## 22 दिसंबर को सुबह 10:00 बजे का राजीव गांधी सेवा केंद्र पूर्व सैनिकों की समस्या समाधान शिविर का आयोजन

मरुधर विशेष/हवासिंह चौधरी

मुंडावर।पूर्व सैनिकों गौरव सेनानियों वीर नारियों एवं वीरांगनाओं और उनपर आश्रितो की समस्या का समाधान 22 दिसंबर 2022 को सुबह 10:00 बजे से मुंडावर उपखंड के ग्राम पंचायत मानका के राजीव सेवा केंद्र मानका में 10:00 से समस्या समाधान शिविर का आयोजन किया जाएगा कमांडर शिव कुमार वर्मा जिला सैनिक कल्याण अधिकारी बहरोड ने बताया कि 22 दिसंबर को सुबह 10:00 बजे से मुंडावर उपखंड के गांव मानका के राजीव गांधी सेवा केंद्र परिसर में समस्या समाधान शिविर का आयोजन किया जाएगा जिसमें मौके पर ही कैंटीन तथा पेंशन संबंधी समस्याओं का निराकरण किया जाएगा वह अपील की है कि आसपास के क्षेत्र से जिन पूर्व सैनिकों, वीर नारियो, वीरांगनाओं व उनपर आश्रितो की विभिन्न समस्याओं को कैंटीन कार्ड कोई और कार्य है हो तो मानका के राजीव गांधी सेवा केंद्र परिसर में पहुंचकर अपनी समस्या का समाधान करवाएं

## भारतीय रिजर्व बैंक व क्रिसिल फाउंडेशन के तत्वधान में इंदिरा कॉलोनी व नंगला धनसिंह में कैंप हुआ आयोजित

मरुधर विशेष /दिनेश लेखी

कठूमर। भारतीय रिजर्व बैंक व क्रिसिल फाउंडेशन के तत्वधान में ग्राम पंचायत मुख्यालय इंदिरा कॉलोनी पर और धनसिंह का नंगला गांव में कैंप का आयोजन किया। जिसमें लगभग 270 ग्रामीण लोगों ने भाग लिया वह कठूमर फील्ड ऑफिसर प्रिया चौधरी, सरपंच बनवारी सिंह, वार्डपंच सौदान, बलजीत सिंह, प्रदीप सिंह, शमला देवी, आंगनवाड़ी सहोगनी संतोष देवी ,किस्मत देवी, विजेंद्र सिंह आदि ग्रामीण लोगों कैंप में मौजूद रहे

अतिथियों का फील्ड ऑफिसर प्रिया चौधरी ने फूल माला पहनाकर स्वागत किया।वह फील्ड ऑफिसर प्रिया चौधरी ने लोगों को डिजिटल बैंकिंग, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, सुकन्या समृद्धि योजना तथा अन्य बैंकिंग योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। और प्रिया चौधरी ने बताया कि अलवर जिले के 6 ब्लॉक में भारतीय रिजर्व बैंक वह क्रिसिल फाउंडेशन के द्वारा सीएफएल प्रोग्राम चलाया जा रहा है। और यह प्रोग्राम फील्ड ऑफिसर प्रिया चौधरी के द्वारा आयोजित किया गया वही ग्राम पंचायत इंदिरा कॉलोनी के सरपंच ने प्रिया चौधरी फील्ड ऑफिसर को कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए मौके पर लैटर पैड पर प्रशंसा पत्र दिया और बैंक बीसी से डाटा प्राप्त किया। इस मौके पर गांव महिला पुरुष मौजूद रहे।

## कुशलगढ में प्रदेश अध्यक्ष का पहलीबार आगमन पर विप्र फाउंडेशन के पदाधिकारियों ने स्वागत किया

बांसवाडा ब्यूरो चीफ अरूण जोशी की रिपोर्ट

कुशलगढ:भारतीय जनता पार्टी प्रदेश अध्यक्ष माननीय सतीशजी पूनिया का कुशलगढ़ परशुराम कुटिया नागनाथ महादेव मंदिर परिसर में विप्र फाउंडेशन परिवार द्वारा किया गया। परशुराम कुटिया, नागनाथ महादेव, रामदेव बाबा, साई बाबा मंदिर में दर्शन किए। विप्र फाउंडेशन के पदाधिकारियों ने दुपट्टा ओढ़ाकर बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष सतिशजी पुनियाजी का स्वागत किया गया। इस अवसर पर विप्र फाउंडेशन संरक्षक ओम प्रकाश जी जोशी, नरेश जी त्रिवेदी, विप्र फाउंडेशन प्रदेश संगठन मंत्री युवा प्रकोष्ठ प्रदेश सचिव हेमेंद्र पंड्या,मीडिया प्रभारी अरुण जोशी भाजपा युवा प्रकोष्ठ नगर अध्यक्ष प्रीतेश (रिंकू) पंड्या युवा प्रकोष्ठ पदाधिकारी राहुल पंड्या सुनील शर्मा मधुसूदन व्यास आदि उपस्थित रहे।

## ओसियां परिसंघ ब्लॉक अध्यक्ष को श्रद्धांजलि दी

मरुधर विशेष फलोदी। परम श्रद्धेय शिक्षाविद स्मृति शेष हुकमाराम जाटोलिया ऑल इंडिया परीसंघ ब्लॉक अध्यक्ष ओसिया का आकस्मिक निधन होने पर आल इण्डिया परिसंघ जिला जोधपुर द्वारा शोक सभा आयोजित कर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि दी गई। श्रद्धांजलि कार्यक्रम में जिला अध्यक्ष श्री वल्लभ लखेश्री ने स्वर्गीय हुकमा राम को बहुत ही मिलनसार और समाज के प्रति समर्पित व्यक्तित्व बताते हुए जाटोलिया परिवार,समाज और परिसंघ के लिए अपूर्णीय क्षति बताई।श्रद्धांजलि कार्यक्रम में जीवनराम भील,भूराराम

राम इणखिया, मोहन मेघवाल, मुकेश सर्वटा,मनू बारासा, प्रेमलता जीनगर महिला विंग अध्यक्ष फलोदी, नटवर पवार ब्लॉक अध्यक्ष फलोदी ,घनश्याम ढोली यूथ अध्यक्ष फलोदी, बाबूलाल पली ब्लॉक अध्यक्ष लोहावट ,सूबेदार टीकू राम भील ब्लॉक अध्यक्ष बाप, दुगाराम बिरठ ब्लॉक अध्यक्ष देचू ,रेशमा राम कोल्लू जिला सचिव, बी एवं पारस,सोहन पंवार छिला, सुरेश पंवार संभाग उपाध्यक्ष, पार्षद लिलाधर, पार्षद चांदनी देवी, पार्षद मुकेश सांसी, भूराराम ठेकेदार मोडाराम सामाजिक कार्यकर्ता, हनुमान मेघवाल एका, किशन मेघवाल, कन्हैया जीनगर, शेरा राम सांसी, आशुराम जी आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित होकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धा सुमन अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

## भारतीय सेना ने चलाया गंगा को साफ रखने का जन जागरूकता अभियान

मरुधर विशेष/शिवकुमार मौर्य

कानपुर दिनांक 21 दिसंबर 2022 भारतीय सेना की 137 सीआईटीएफ बटालियन 39 गोरखा राइफल ने कानपुर निगम स्थित ग्राम पंचायत लोढवा खेड़ा के देवनिपुरवा ग्राम में गंगा स्वच्छता के लिए जन जागृत अभियान चलाया प्रधान श्रीमती निर्मला निषाद उपस्थित रहे इस समय गंगा टास्क फोर्स के सूबेदार समरजीत सिंह, सूबेदार ललित मोहन और अन्य 10 जवान मौजूद रहे गंगा टास्क फोर्स के कमान अधिकारी कर्नल वेद व्रत वैद्य दिशा निर्देशन पर गंगा सफाई की जागरूकता अभियान घाट स्वच्छता पौधरोपण विगत 4 सालों से चलाया जा रहा है इस अवसर पर ग्राम में गंगा तट पर समस्त ग्रामीण ग्राम वासियों को एकत्रित करके गंगा को साफ रखने के लिए प्रेरित किया और सभी को गंगा संकल्प दिया गया इस कार्यक्रम में लोढवा खेड़ा ग्राम के सैकड़ों लोग उपस्थित रहे गांव के प्रधान श्रीमती निर्मला निषाद ने गांव वालों को गंगा को साफ रखने के लिए हिदायत दिये और प्रेरित किया

# जिला बनाने की मांग को लेकर शिष्टमंडल ने की मुख्यमंत्री से मुलाकात,सौंपा ज्ञापन

मरुधर विशेष आमिर खान कामां

कामां- कामां को जिला बनाने की मांग को लेकर दरवाजे पर चल रहा अनिश्चितकालीन सांकेतिक धरना बुधवार को 36 वें दिन भी जारी रहा वही दूसरी ओर मंगलवार देर शाम को जिला बनाओ संघर्ष समिति के संरक्षक एडवोकेट मुरारी लाल सक्सेना व पंजाबी राजपूत समाज के अध्यक्ष निहाल सिंह तरगोतरा के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने अलवर में भारत जोड़ों यात्रा के दौरान मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से मुलाकात की और कामां को जिला बनाने की मांग को लेकर ज्ञापन सौंपो

जिला बनाओ संघर्ष समिति के संरक्षण मुरारी लाल सक्सेना ने बताया कि देर रात्रि को रामगढ़ व नौगांवा के मध्य भारत जोड़ो यात्रा के रात्रि कालीन कैंप के दौरान प्रतिनिधि मंडल ने मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से मुलाकात की और कामा को जिला बनाने की मांग को लेकर ज्ञापन सौंपा शिष्टमंडल द्वारा मुख्यमंत्री गहलोत को अवगत कराया गया कि वर्ष 2012 में भी आपसे कामा को जिला बनाने की लिए मुलाकात की गई थी तब आपने समिति को आश्वासन दिया था कि जब कभी भी राजस्थान में नए जिले बनाए जाएंगे तब भरतपुर में कामा को प्राथमिकता दी जाएगी प्रतिनिधि मंडल ने मुख्यमंत्री को अवगत कराया कि कामा जिला बनाने के सारे नियमों को पूरा करता है धार्मिक सांस्कृतिक व ऐतिहासिक दृष्टि से भी कामा को जिला बनाया जाना आवश्यक है कामा को जिला बनाए जाने से यहां रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और यह क्षेत्र पर्यटन के रूप में भी विकसित होगा कामा ब्रज क्षेत्र का केंद्र बिंदु है नंदगांव बरसाना की सीमाएं भी कामां से लगती हैं रोजाना हजारों पर्यटक व तीर्थयात्री ब्रज क्षेत्र कामां में ब्रज दर्शन के लिए आते हैं सक्सेना ने बताया कि मुलाकात के दौरान मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को उनका संघर्ष समिति को दस वर्ष पूर्व दिया गया वादा याद दिलाते हुए कामा को जिला बनाने की मांग की गई जिस पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि जिला बनाओ हाई लेवल कमेटी के अध्यक्ष राम लुभाया द्वारा रिपोर्ट तैयार की जा रही है आपकी मांगों पर मांग पर सकारात्मक विचार किया जाएगा मुख्यमंत्री से मुलाकात करने वाले प्रतिनिधिमंडल में जिला बनाओ संघर्ष समिति के वैध रूप बसंत सैनी व डॉ रविंद्र तरगोतरा,पंजाबी राजपूत समाज के अजयपाल सिंह मांडी,गुरचरण सिंह ऊंधन, चरण सिंह मूसेपुर शामिल थे

# कोविड को लेकर उत्तर प्रदेश भर में अलर्ट उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने सीएमओ को चौकसी बढ़ाने के निर्देश

मरुधर विशेष/संवाददाता शिवकुमार मौर्य

**चीन में फिर से कोविड का प्रकोप बढ़ने लगा है। इसके मद्देनजर उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने प्रदेश भर में अलर्ट जारी किया गया है। स्वास्थ्य व चिकित्सा शिक्षा विभाग जाँच से लेकर उपचार तक की व्यवस्था शुरू करें। एयरपोर्ट पर चौकसी बढ़ा दी जाये। संक्रमण प्रभावित देशों की यात्रा से लौटे लोगों की जाँच कराई जाये।**

लखनऊ। चीन में फिर से कोविड का प्रकोप बढ़ने लगा है। इसके मद्देनजर उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने प्रदेश भर में अलर्ट जारी किया गया है। स्वास्थ्य व चिकित्सा शिक्षा विभाग जाँच से लेकर उपचार तक की व्यवस्था शुरू करें। एयरपोर्ट पर चौकसी बढ़ा दी जाये। संक्रमण प्रभावित देशों की यात्रा से लौटे लोगों की जाँच कराई जाये। कोरोना पॉजिटिव मरीजों की जिनोम सीक्वेंसिंग कराई जाए। ताकि वायरस के वैरिएंट का पता लगाया जा सके।बुधवार को उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने प्रदेश के सभी सीएमओ और चिकित्सा शिक्षा विभाग के अधिकारियों को सतर्कता बढ़ाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि कोरोना संक्रमण प्रभावित देश से आने वाले यात्रियों की जाँच सुनिश्चित की जाये। जीन सिकवेसिंग कराई जाये। इससे नए वैरिएंट का सटीक पता लगाया जा सके। सर्दी-जुकाम और बुखार समेत अन्य लक्षण वाले यात्रियों को चिन्हित करें। कोविड संदिग्ध के नमूने लेकर जाँच कराई जाये। इस दौरान यात्रा से लौटे लोगों को होम आईसोलेशन में रहने की सलाह दी जाये। स्वास्थ्य विभाग विदेश की यात्रा से लौटे लोगों की सूची बनाये। 12 से 14 दिन तक उनकी सेहत का हाल लें। किसी भी तरह की परेशानी होने पर उन्हें उपचार उपलब्ध कराया जाये।

### जाँच व उपचार के इंतजाम करें

कोविड संक्रमितों की भर्ती की व्यवस्था करें। ऑक्सीजन से लेकर आरटीपीसीआर, सीटी स्कैन, एक्सरे, पैथोलॉजी की जाँच से जुड़े संसाधनों की पर्याप्त व्यवस्था कर लें। मास्क, पीपीई किट व ग्लब्स आदि भी पर्याप्त मात्रा में जुटा लें। उपचार में इस्तेमाल होने वाली दवाओं की व्यवस्था करें।

### सर्तक रहें

उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने कहा कि चीन में संक्रमण का खतरा फिर से बढ़ गया है। सावधानी बरतकर कोविड के खतरों से खुद को बचा सकते हैं। भीड़-भाड़ में बिना जरूरत जाने से बचें। मास्क लगाकर ही बाहर निकलें। उन्होंने कहा कि जागरूकता से कोरोना को मात दी सकती है। सतर्कता बरतें। दिशा-निदेर्शों का पालन करें। इससे आसानी से संक्रमण से मुकाबला किया जा सकता है।

# वार्षिक सामान्य निकाय की बैठक एवं तृतीय स्थापना दिवस कार्यक्रम सम्पन्न

मरुधर विशेष/ संवाददाता शिवकुमार मौर्य

आज दिनांक 21.12 .2022 को बेसिक शिक्षा परिषद वेतन भोगी शिक्षण क्षेत्र कर्मचारी सहकारी समिति लिमिटेड गौरीगंज अमेठी की वार्षिक निकाय की बैठक एवं तृतीय स्थापना दिवस कार्यक्रम धीरेन्द्र प्रताप सिंह, सभापति/अध्यक्ष की अध्यक्षता में जे एस रेजीडेंसी गौरीगंज में संपन्न हुआ। बैठक में संचालक मंडल से जयराम कनौजिया,राम कुमार सिंह, सुनील कुमार सिंह, अतुल श्रीवास्तव, शशि कुमारी सिंह,अमृता जायसवाल ने अपने विचार व्यक्त किए। सभी ने समिति के उत्तरोत्तर विकास की सराहना की ,और भविष्य के लिए शुभकामनाएं प्रदान किया। सर्वप्रथम संचालक सुनील सिंह ने आए हुए अतिथियों का व सोसाइटी के सम्मानित सदस्यों का स्वागत किया और सोसाइटी पर चर्चा परिचर्चा की।राम कुमार सिंह - संचालक ने समस्त ब्लॉकों में कैम्प लगाकर सदस्यों की संख्या बढ़ाने की बात कही। सभापति धीरेन्द्र प्रताप सिंह ने समिति की ओर से की जा रही ऋण वितरण को और अधिक सरल और पारदर्शी बनाए जाने की बात कही सभापति ने सभी संचालक साथियों से अपने-अपने क्षेत्रों में सदस्य संख्या बढ़ाने का संकल्प दिलाया। इससे समिति और अधिक शिक्षकों का सहयोग प्रदान कर सके। सभापति ने बताया 1 अप्रैल से ऋण सीमा बढ़ाकर में अधिक से अधिक ?20,00,000 , बीस लाख रुपए तक किया जाएगा ।आप सभी के सुझावों को अमल में लाया जाएगा।आप सभी का बहुत बहुत आभार एवं धन्यवाद।जितना भी जिसका वेतन है उसके वेतन का 25 गुना ऋण देने की सुविधा प्रदान की जाएगी। उपसभापति ने कहा हम सब मिलकर 31 मार्च 2022 तक सोसाइटी की सदस्य संख्या 1100 तक करने का संकल्प लें और सभी सदस्यों को इस सोसाइटी से जोड़ने की महती भूमिका अदा करें। सचिव रमाकांत मौर्य ने सोसाइटी की स्थापना से लेकर आज तक सोसाइटी के विकास पर प्रकाश डाला वह कितने सदस्य हैं ब्लॉक वार कितने सदस्यों को ऋण दिया गया है ब्लॉक बार इन सब के बारे में संक्षेप में जानकारी प्रदान की। संरक्षक दादा सुरेंद्र बहादुर सिंह ने कहा हम लोगों का जिला बनने के बाद से सोचा गया सपना पूरा हुआ इसकी चर्चा - परिचर्चा लोग आपस में किया करते थे और आप सभी ने मिलकर ऐसा हमारे सपने को साकार किया इसके लिए आप सभी का बहुत-बहुत आभार धन्यवाद। शाखा प्रबंधक वीरेंद्र तिवारी, बृजेश सिंह, पदाधिकारियों में श्रीराम सोनी महामंत्री, शीतला सिंह - सहायक सचिव, सतीश जी,लालता प्रसाद द्विवेदी, प्रवीण कुमार ,अनिल यादव ,श्याम बहादुर सिंह, प्रवीण कुमार सिंह,कमलेश यादव, देवांशु सिंह,,अवधेश सिंह, राम बक्स प्रजापति, वाहिद अली, दिलीप यादव, देवेंद्र शर्मा, मुमताज अली, ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह,रामप्रताप रावत, आशुतोष मिश्र, धीरेंद्र शुक्ला, यतीन्द्र मोहन वैश्य, देवांशू सिंह, कपिलेश यादव,नदीम अब्बास रिजवी, तहसीन, वसीम अहमद, डॉ रमेश कुमार सिंह, विनोद सिंह, शैलेंद्र आनंद ,डॉक्टर हृदय प्रकाश सिंह, राम सिंह यादव, रीना मिश्रा ,राम यश वर्मा,चन्द्र प्रकाश यादव, राजेश मिश्रा,अमित मौर्य,ललित मौर्य उपस्थित रहे।

# सकल जैन समाज ने अपने व्यापार बन्द रख कर राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री के नाम एसडीएम को दिया ज्ञापन

बांसवाड़ा ब्यूरो चीफ अरूण जोशी की रिपोर्ट

कुशलगढ़ दिनांक 21 दिसंबर 2022 सकल जैन समाज द्वारा उपखंड अधिकारी को दिया ज्ञापन अपनी आस्था और ऊमग के प्रतीक 'सम्मेद शिखर' को बचाने सड़क पर उतरा सकल जैन समाज, निकाला मौन जुलूस सकल जैन समाज के लोगों ने बुधवार को प्रसिद्ध तीर्थस्थल सम्मेद शिखर को वन्य जीव अभयारण्य, जोनल मास्टर प्लान की सूची से बाहर किया जाए, जैन तीर्थंकरों और अनंत संतो की मोक्षस्थल श्री सम्मेद शिखर जो पारसनाथ पर्वतराज, गिरिडिह (झारखंड) की स्वतंत्र पहचान, पवित्रता और संरक्षण हेतु विश्व जैन संगठन (पंजी.) द्वारा देशव्यापी श्री सम्मेद शिखर जी बचाओ आन्दोलन' के समर्थन में विशाल सभा य रैली में निम्न मांगो हेतु जापनः दिया गया पारसनाथ पर्वतराज' को वन्य जीव अभ्यारण्य, पर्यावरण पर्यटन के लिए घोषित इको सेंसिटिव जोन के अंतर्गत जोनल मास्टर प्लान व पर्यटन मास्टर प्लान, पर्यटन / धार्मिक पर्यटन सूची से बाहर किया जाएँ।'पारसनाय पर्वतराज' को बिना जैन समाज की सहमति के इको सेंसिटिव जोन के अंतर्गत वन्य जीव अभ्यारण्य का एक भाग और तीर्थ 'माना जाता है लिखकर तीर्थराज की स्वतंत्र पहचान व पवित्रता नष्ट करने वाली झारखण्ड सरकार की अनुशंसा पर केंद्रीय वन मंत्रालय द्वारा जारी अधिसूचना क्र. 2795 (ई) दिनांक 02 अगस्त 2019 को अविलय रद्द किया जाए। पारसनाथ पर्वतराज और मधुवन को माँस मंदिरा बिक्री मुक्त पवित्र जैन तीर्थस्थल घोषित किया जाए। पर्वतराज की वन्दना मार्ग को अतिक्रमण,वाहन संचालन य अभक्ष्य सामग्री बिक्री मुक्त कर यात्री पंजीकरण, सामान जांच हेतु सीआरपीएफ व स्कैनर,सीसीटीवी कैमरे सहित दो चेक पोस्ट चिकित्सा सुविधा सहित बनाये जाय पर्वतराज से पेड़ो का अवैध कटान, पत्थरों का अवैध खनन और महुआ के लिए भाग लगाना प्रतिबंधित हो। कि दिनांक 2 अगस्त 2019 को तत्कालीन झारखंड सरकार की अनुसंशा पर केंद्रीय वन मंत्रालय द्वारा झारखंड में गिरिडिह जिले के मधुबन में स्तिथ सर्वोच्च जैन शास्वत तीर्थ श्री सम्मेद शिखर जी 'पारसनाथ पर्वतराज को वन्य जीव अभ्यारण्य का एक भाग घोषित कर इको सेंसिटिव जोन के अंतर्गत पर्यावरण पर्यटन स्थल का दर्जा नहीं देने तथा कि गई घोषणा को अविलंब समाप्त करने की मांग करते हुए शहर के प्रमुख मार्गों से होते हुए मौन जुलूस में बच्चे वह महिलाएं वह पुरुष को युवा वर्ग सहित जुलूस में निकलकर उपखंड कार्यालय पहुंचे जहा नायब तहसीलदार हरीश सोनी को राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, वन एवं पर्यावरण मंत्री तथा झारखंड के मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा।

## हसदेव प्रेस क्लब की महत्वपूर्ण बैठक हुई सम्पन्न

मरूधर विशेष राकेश कुमार बंसल छत्तीसगढ़

विगत सोमवार को नवीन जिले मनेन्द्रगढ़ चिरमिरी भरतपुर के खोंगापानी में स्थानीय पत्रकारों के द्वारा एक बैठक रखी गई। बैठक की अध्यक्षता हसदेव प्रेस क्लब के संरक्षक अब्दुल सलाम कादरी ने की।जिसमें संगठन की मजबूती और विस्तार पर चर्चा उपरांत उपस्थित सभी पत्रकारों के समक्ष सर्व सम्मति से संगठन को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण पद की जिम्मेदारी दी गई।हसदेव प्रेस क्लब के प्रथम अध्यक्ष के रूप में राजकुमार केशरवानी, महासचिव के लिए वरिष्ठ पत्रकार खगेन्द्र यादव, कोषाध्यक्ष भगवान दास, उपाध्यक्ष क्रमशः राकेश कुमार बंसल एवं रितेश कुमार को बनाया गया।नवनियुक्त अध्यक्ष श्री केशरवानी नें कहा कि जो जिम्मेदारी मुझे संगठन ने सौंपी है उसे मैं पूरी निष्ठा से पूरा करूँगा।महासचिव खगेन्द्र यादव ने कहा कि हम पत्रकार देश के चौथे स्तम्भ माने जाते है जब हममें एकता रहेगी तभी हम सभी आम जनमानस की आवाज सरकार तक पहुंचाने से समर्थ होंगे।हसदेव प्रेस क्लब के कोषाध्यक्ष भगवान दास ने कहा कि हमारा संगठन पत्रकारों के हित के लिए है, जो पत्रकार बंधुओं के लिए कंधे से कंधा मिलाकर चलेगा और जो भी पत्रकार संगठन से जुड़ना चाहेंगे उनका स्वागत है।बैठक में प्रमुख रूप से अब्दुल सलाम कादरी, खगेन्द्र यादव, राजकुमार केशरवानी, भगवान दास, राकेश कुमार बंसल, रितेश कुमार, जवाहिर समेत अन्य पत्रकार उपस्थित रहे।

## नसीराबाद जीनगर समाज द्वारा अखिल भारतीय जीनगर समाज हरिद्वार धर्मशाला के आजीवन सदस्य बनाने हेतु भरे फार्म

मरूधर विशेष/नसीराबाद - अजमेर /राहुल कुमार वर्मा

नसीराबाद जीनगर समाज द्वारा अखिल भारतीय जीनगर समाज हरिद्वार धर्मशाला के आजीवन सदस्य बनने के लिए फार्म भरे। आगामी दिनों में अखिल भारतीय स्तर पर हरिद्वार धर्मशाला के चुनाव संपन्न होंगे। जिसमें संपूर्ण भारतवर्ष के जीनगर समाज बंधु भी भाग लेंगे। समस्त भारतवर्ष में सदस्य और आजीवन सदस्यों के फार्म जीनगर समाजसेवियों द्वारा भरे जा रहे हैं। अजमेर जिले के नसीराबाद के समाज बंधुओं ने भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया और समाज के इस होने वाले महा चुनाव में अपनी भागीदारी निश्चित की। भरे गए फार्मो की जांच में पार्षद महेंद्र डाबी, जीनगर समन्वय प्रतिनिधि अशोक सोनगरा, पीटीआई महेंद्र सांखला, पत्रकार श्याम सिंह सांखला आदि मौजूद रहे।

## राधा स्वामी पीजी कॉलेज में सरकार के 4 वर्ष पूर्ण होने पर विभिन्न प्रतियोगिता हुई आयोजित

मरुधर विशेष/ दिनेश लेखी

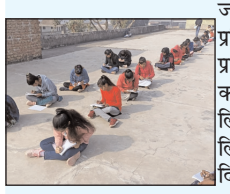

नगर। राधास्वामी पीजी कॉलेज नगर में राज सरकार के 4 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर मॉडल स्ट्रीट राजस्थान की विभिन्न फ्लैगशिप योजनाओं की जानकारी को लेकर एक लिखित परीक्षा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कॉलेज प्राचार्य डॉ अरूण कुमारी ने बताया कि प्रत्येक कक्षा से प्रथम 3 विद्यार्थी द्वितीय चरण की लिखित परीक्षा प्रतियोगिता में सम्मिलित हुए लिखित प्रतियोगिता परीक्षा का आयोजन 20 दिसंबर को किया गया।21 दिसंबर बुधवार को आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें सभी कक्षाओं के छात्र- छात्राओं ने भाग लिया और राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही जन कल्याणकारी योजनाओं के बारे में अपने अपने विचारों को भाषण द्वारा प्रस्तुत किया गया। विद्यार्थियों द्वारा चिरंजीवी स्वास्थ्य योजना, इंदिरा गांधी रसोई योजना, देवनारायण अथवा कालीबाई स्कूटी योजना, जन सूचना पोर्टल, छात्रवृत्ति योजना, मुख्यमंत्री कृषक योजना आदि के बारे में विचार व्यक्त किए गए। प्रत्येक कक्षावार प्रथम तीन इस मौके पर महाविद्यालय व्याख्याता विनय दीक्षित, देवेंद्र कुमार, संदीप सिंह, ज्योति शर्मा, कार्यालय प्रभारी कमल चंद आदि सदस्य उपस्थित रहे।

## राजकीय प्राथमिक विद्यालय मेहराणा में गर्म जर्सी व पुस्तक का वितरण किया गया

मरुधर विशेष राकेश सैनी

तिजारा जैन इंटरनेशनल संस्थान तिजारा के तत्वधान में साध्वी सुधा के कर कमलों के द्वारा राजकीय प्राथमिक विद्यालय मेहराणा तिजारा के 50 अध्ययनरत बच्चों को गर्म वस्त्र एवं पाठ्यपुस्तक का वितरण किया गया। इस अवसर पर साध्वी ने अपने उद्बोधन में उपस्थित ग्रामीणों व बच्चों को पढ़ाई का महत्व बताया तथा अभिभावकों से आग्रह किया की सभी अपने बच्चों को विद्यालय समय पर तथा सफाई से भेजें। इस अवसर पर यू सी ई ओ तिजारा कृष्ण भाटिया, अध्यापक विनोद कुमार, अध्यापक सुरेंद्र कुमार ,लीलाराम रांगेरा ,वहिदन सहित एसएमसी के सदस्य व ग्रामीण उपस्थित रहे।

## श्री बाल विकास टीटी कॉलेज नगर में आशु भाषण प्रतियोगिता का हुआ आयोजन

मरुधर विशेष /दिनेश लेखी

नगर। श्री बाल विकास टीटी कॉलेज अलवर रोड नगर में प्राचार्य डॉ महेंद्र सिंह के सानिध्य में महाविद्यालय परिसर में 19 से 24 दिसंबर तक विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है। प्रदेश में सरकार के कार्यकाल के 4 वर्ष पूर्ण होने पर प्रदेश में चलाई जा रही जनकल्याणकारी विविध फ्लैगशिप योजनाओं के संबंध में विद्यार्थियों के माध्यम से समाज में जागरूकता लाने के लिए बुधवार को महाविद्यालय में एक मिनट की आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।आशु भाषण प्रतियोगिता में प्रथम द्वितीय तृतीय स्थान प्राप्त किया। निर्णायक की भूमिका का निर्वाह संकाय सदस्य डॉक्टर लोकेश शर्मा व सुनीता सोमवंशी ने किया। इस प्रतियोगिता में महाविद्यालय के समस्त विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। और 22 दिसंबर 2022 को राज्य सरकार की फ्लैगशिप योजनाओं से संबंधित दो मिनट की आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन करवाया जाएगा।इस मौके पर महाविद्यालय व्याख्याता डॉ लोकेश कुमार शर्मा, डॉ बलवंत सिंह, सुनीता सोमवंशी,रजनी कुमारी,रितु पालीवाल, नंदराम ,सत्यवीर सिंह कंप्यूटर शिक्षक, मोतीलाल ,वीरेंद्र सिंह, अरुण कुमार, कार्यालय प्रभारी दिनेश चंद लेखी तथा सहायक कर्मचारी नंदराम,हुब्बीलाल आदि उपस्थित रहे।

## सम्मेद शिखर बचाओ अभियान के तहत जैन समाज ने निकाली रैली सौपा ज्ञापन

मरुधर विशेष दिनेश लेखी

कठूमर । झारखंड सरकार द्धारा सम्मेद शिखरजी को पर्यटन क्षेत्र घोषित करने आदेश वापस लेने और जैन तीर्थ घोषित किये जाने की मांग को लेकर कठूमर सकल जैन समाज ने सम्पूर्ण कस्बे मे? आक्रोश रैली निकाली और राष्ट्रपति प्रधानमंत्री सहित झारखंड सरकार के नाम उपखंड अधिकारी को लाखन सिंह गूर्जर और तहसीलदार राजेश मीना को ज्ञापन सौंपा। जैन समाज ने ज्ञापन के माध्यम से मांग की झारखंड़ और केंद्र सरकार ने पवित्र जैन तीर्थ सम्मेद शिखर को पर्यटक स्थल घोषित कर दिया जिससे वहां विशेषकर शीत ऋतु में जैन पावनता, पवित्रता को तार तार करते हुए अशोभनीय गतिविधियां देखी जा रही हैं। जिनसे सम्पूर्ण जैन समाज आहत है । वही पिछले कुछ माह से लगातार विभिन्न मंचों से पूरे देश भर में ही नहीं, विदेश से भी जैन समाज आवाज उठा रहा है। वही पूरा देश जानता हैं 20 जैन तीर्थंकरों और अनंत संतो की मोक्ष स्थली होने के कारण श्री सम्मेद शिखर जी का कण-कण प्रत्येक जैन के लिये पूजनीय एवं वंदनीय है। जैन समाज की मांग है झारखंड़ प्रदेश स्थित श्री सम्मेद शिखरजी, अहिंसक, शाकाहार, पवित्रतम तीर्थ क्षेत्र घोषित किया जाये। इस मौके पर अध्यक्ष मुकेश जैन, विजयपाल जैन, अमोलक प्रसाद जैन,सरूपचंद जैन,अशोक जैन,डब्बू जैन,इंद्रा जैन,नरेश जैन मौजूद रहे

## वैष्णव मंडल द्वारा अन्नकूट का आयोजन किया गया

मरुधर विशेष फलोदी। फलोदी उपखंड मुख्यालय पर श्री यमुना सत्संग वैष्णव मंडल के तत्वाधान में अन्नकूट का आयोजन वैष्णव बिज्जु फार्म हाऊस पर किया गया, जिसमें भारी संख्या में वैष्णव समुदाय ने उपस्थित होकर ठाकुर जी को स्नेहपूर्वक अन्नकूट का भोग लगाया। इस दरम्यान गिरिराज जी का पूजन मथुरेश हवेली के मुखिया द्वारा किया गया तथा ठाकुर जी के मनभावन कीर्तन उमाकांत थानवी एवं मनमोहन व्यास की मंडली द्वारा प्रस्तुत किये गये। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित सभी वैष्णव जन ने प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम की व्यवस्थाओं में दीनदयाल व्यास तथा नंदकिशोर कंटा के निर्देशन में वैष्णव मंडली ने सराहनीय सहयोग किया।

## सर्दी के मौसम में गरीब बेसहारा लोगों को ठंड से बचाव हेतु मंगता समुदाय के ( 6)परिवारों को वितरण किया गया कंबल

मरुधर विशेष/ संवाददाता शिवकुमार मौर्य

अमेठी के तहसील तिलोई में आज रऊट फाल्गुनी सिंह ने सर्दी के मौसम में गरीब बेसहारा लोगों को ठंड से बचाव हेतु रऊट तिलोई फाल्गुनी सिंह ने मंगता समुदाय के 6 परिवारों को वितरण किया कंबल। गरीब असहाय लोगों के लिए ठिठुरन वाली ठंड से बचाने के लिए रऊट तिलोई पूरी तरह फिक्रमंद हैं।

## क्षत्रिय जाट परगना सर्व समाज के साथ चौ.चरण सिंह की मनाएंगे जयंती

मरुधर विशेष/ हवासिंह चौधरी

मुंडावर। श्री श्रत्रिय जाट परगना जिंदोली की ओर से सभी समाजों के साथ मिलक 23 दिसंबर शुक्रवार को प्रातः 9 बजे ततारपुर चौराया पट्रोल पम्प के पास (सभा स्थल) किसानों के मसीहा चौधरी चरण सिंह की 121वीं जयन्ती मनाई जायेगी। जिसमें सर्व समाज के सरपंचपूर्व सरपंच, पार्षद पूर्व पार्षद एमपीएस व पूर्व एमपीएस तथा सर्व समाज के गणमान्य नागरीक उपस्थित होंगे। इस उपलक्ष्म पर मुण्डावर विद्यायक मंजीत धर्मपाल चौधरी, प्रधान प्रतिनिधि महेश गुप्ता, बहरोड , नीमराना प्रधान प्रतिनिधि बलवान सिंह, जिला आबकारी अधिकारी ओम प्रकाश सारण अलवर, रोहिताश ,ईश्वर सिंह,पूर्व प्रधान किसान महापंचायत के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, शिशन चौधरी किसान महा पंचायत के प्रदेश अध्यक्षा मुसददी लाल यादव, किसान नेता शेर सिह बोरा आदि सर्व समाज के लोग उपस्थित होंगे। श्री क्षत्रिय जाट समाज परगना के अध्यक्ष राममेहर चौधरी सहित सभी पदाधिकारी एवं सदस्य मौजूद रहेंगे।

## पदोन्नति होने पर साफा व फूल माला पहना कर दी बधाई

मरुधर विशेष/ विजय सिंह

खैरथल । कस्बे के मातौर रोड स्थित मणप्पुरम गोल्ड लोन बैंक में कार्यरत सहायक मैनेजर योगेश सैनी की पदोन्नत भिवाड़ी ब्रांच मैनेजर के पद पर होने पर विदाई समारोह कार्यक्रम हुआ आयोजित। आयोजित समारोह में मुख्य अतिथि मातौर निवासी समाजसेवी राजीव चौधरी रहे। शाखा में उपस्थित शाखा प्रबंधक चैन सिंह मीणा एवं कर्मचारी रविंद्र गुर्जर ,समम मीणा, सुमन मीना, अशोक चौधरी ,विनोद सैनी, एवं मुख्य अतिथि राजीव चौधरी,जय किशन प्रजापत, बबलू (लोकेश), कुलदीप शर्मा, सचिन कुमार, मिथुन जाट, खेम पाल आदि ने योगेश सैनी को फूल माला व साफा पहनाकर तथा केक काटकर व स्मृति चिन्ह भेंट कर जोरदार सम्मान स्वागत के साथ उनके उज्जवल भविष्य की कामना की । इस अवसर पर समाजसेवी राजीव चौधरी ने बताया कि मैनेजर योगेश सैनी ने खैरथल में उपस्थित बैंक में अपने पद की जिम्मेदारी को निभाते हुए सराहनीय काम किया है। हम आशा करते हैं आगे भी वह अपने पद की जिम्मेदारी को निभाते हुए अच्छा काम करेंगे।

## छात्रसंघ अध्यक्ष को बर्खास्त करने को लेकर छात्रों ने दिया ज्ञापन

मरुधर हिन्द/रमाकान्त शर्मा

बानसूर - कस्बे के राजकीय महाविद्यालय के छात्रसंघ अध्यक्ष राहुल यादव को छात्रसंघ पद से बर्खास्त करने के लिए बुधवार को महाविद्यालय के छात्रों ने प्रधानाचार्य और एसडीएम को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। छात्रों ने ज्ञापन में बताया कि राजकीय महाविद्यालय बानसूर के अध्यक्ष राहुल यादव का अवैध शराब का व्यवसाय है जो एक राज्य से दूसरे राज्य में शराब की तस्करी करता है। अध्यक्ष राहुल यादव को 17 दिसंबर को पुलिस टीम ने बानसूर में रंगेहाथों गाड़ी से शराब की तस्करी करते हुए पकड़ा है। छात्रों ने ज्ञापन में मांग कि है कि 15 दिन के अंदर महाविद्यालय के छात्रसंघ अध्यक्ष के खिलाफ कानूनी कार्यवाही कर अध्यक्ष को उसके पद से हटाने की कार्यवाही की जाए। साथ ही उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि अगर 15 दिन में महाविद्यालय के छात्रसंघ अध्यक्ष को पद से नहीं हटाया गया तो सभी छात्र-छात्राओं की ओर से महाविद्यालय में धरना प्रदर्शन किया जाएगा। इस दौरान ममता रावत, सुंदर रावत ,सुंदर कुमार , मनोज राणा, अशोक कुमार, योगेश, सचिन, योगेश गुर्जर, सचिन सैनी ,आशीष कुमार सहित सैकड़ों की संख्या में छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

## भगवान परशुराम अमृत भारत रथयात्रा का बानसूर में भव्य स्वागत हुआ

मरुधर हिन्द/ रमाकान्त शर्मा

बानसूर - विप्र फाउंडेशन की ओर से निकाली जा रही भगवान परशुराम अमृत भारत रथयात्रा मंगलवार शाम बानसूर पहुंची। जहां ब्राह्मण समाज की ओर से विप्र फाउंडेशन के पदाधिकारियों का स्वागत किया गया। साथ ही बाइक रैली निकालकर यात्रा का स्वागत किया गया।रथ यात्रा पर पुष्प वर्षा की गई। बाईक रैली निकालकर परशुराम भगवान की पूजा अर्चना की गई । कस्बे के सुभाष सर्किल पर नगर पालिका चेयरमैन नीता सज्जन मिश्रा के नेतृत्व में रथ यात्रा का स्वागत किया गया। साथ ही पूर्व यातायात मंत्री डॉ रोहिताश शर्मा के नेतृत्व में कोटपूतली रोड कार्यालय पर यात्रा का भव्य स्वागत किया गया। इस दौरान विप्र फाउंडेशन के बानसूर ब्लॉक के अध्यक्ष राघवेंद्र शर्मा, डॉ. राम अवतार शर्मा, डॉक्टर गजेंद्र ज्ञानपुरीया, जयप्रकाश शर्मा, मनीष जोशी ,ब्राह्मण समाज अध्यक्ष अरविंद शर्मा, पूर्व ब्राह्मण समाज अध्यक्ष पीयूष पुरोहित, शशिकांत बोहरा, गंगा लहरी पारीक, रजनीश पुरोहित सहित काफी संख्या में समाज के लोग मौजूद रहे।

## क्रिकेट प्रतियोगिता का हुआ शुभारंभ

मरुधर हिन्द/रमाकान्त शर्मा

बानसूर - उपखंड के निकटवर्ती ग्राम तुराना में बुधवार को समस्त ग्रामवासियों की ओर से देव क्रिकेट प्रतियोगिता का शुभारंभ किया गया। क्रिकेट प्रतियोगिता में विजेता रहने वाली टीम को 11 हजार रुपए नगद और ट्रॉफी देकर सम्मानित किया जाएगा। साथ ही दूसरे स्थान पर रहने वाली टीम को 5100 रुपए और ट्रॉफी से सम्मानित किया जाएगा। इस दौरान क्रिकेट प्रतियोगिता का उद्घाटन युवा नेता राकेश दायमा एवं मोहनदास महाराज के कर कमलों से किया गया। क्रिकेट प्रतियोगिता का उद्घाटन मैच निमूचाना और जाहिदपुरा टीम के बीच में खेला गया। इस दौरान अतिथियों ने युवाओं को खेल को खेल की भावना से खेलने और नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि गांव के युवा खेलों में आगे चलकर अपने माता पिता और गांव का ही नहीं अपितु क्षेत्र का भी नाम रोशन कर सकते है। इस दौरान राकेश दायमा, मोहनदास महाराज, करण सिंह ,यादराम रावत, राजू रावत, सुभाष कसाना, रूप स्वामी सहित ग्रामीण और खिलाड़ी मौजूद रहें।

# बीजेपी की जन आक्रोश सभा :प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनिया ने साधा निशाना, कहा-सत्ता आते ही भ्रष्टाचारियों पर चलेगा बुलडोजर

बांसवाड़ा ब्यूरो चीफ अरूण जोशी की रिपोर्ट

कुशलगढ बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष डॉक्टर सतीश पूनियां ने कुशलगढ़ में जनआक्रोश सभा को संबोधित करते हुए कांग्रेस सरकार पर जमकर निशाना साधा। पूनिया ने खाद की कमी और भर्ती परीक्षा में पेपर लीक होने पर कांग्रेस सरकार को आड़े हाथ लिया. राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा पर सतीश पुनिया ने कहा कि राहुल गांधी जहां पर भारत जोड़ने के लिए यात्रा निकाल रहे हैं वो पहले कांग्रेस को जोड़ ले जो बिखरी हुई है.उन्होंने कुशलगढ़ में कार्यकताओं को संबोधित करते हुए विकास दर में प्रदेश 2018 में 12वें नंबर था। अब 24 वें नंबर पर पहुंच गया है। राजस्थान सरकार ने 5 लाख करोड़ का कर्जा लिया है ऐसे में जन्म लेने वाले बच्चा पर अपने माथे पर 80 हजार का कर्ज लेकर आता है ।

राजस्थान के हालात अफ्रीकी देशों के जैसे हो गए हैं जैसे वहां भुखमरी, बेकारी व बेरोजगारी है। यह सरकार ऐसी है, जो भगवान भरोसे चल रही है। राजस्थान की जनता की चिन्ता करने के बजाये, कुर्सी बचाये रखनें की चिन्ता मात्र तक ही सीमित है।उन्होंने कहा राजस्थान की जनता ने इस कांग्रेस सरकार को उखाड़ फेंकने का निर्णय किया है। जनआक्रोश सभा में मिली शिकायतों की गठरी बन गई है। जिस गहलोत के माथे पर रखा जाएगा या घोषणा पत्र में लिखेंगे। गहलोत सरकार ने चुनाव में किए अधिकांश वायदे पूरे नहीं किए है। साथ ही जनता के वोटों को ठगी की है। युवाओं व किसानों से ठगी की है। अब जनता उन्हें सबक सिखाने के लिए कमर कसे बैठी है । उन्होंने कहा हर 12 किलो मीटर पर कोई न कोई अधिकारी ट्रेप हुआ । आखंठ भ्रष्टाचार में सरकार डूबी हुई है। अब कुशासन समाप्त होगा, भाजपा का सूरज उगेगा, प्रचंड बहुमत से भाजपा राजस्थान में सरकार बनाएगी। सतीश पूनिया ने कार्यक्रम के पश्चात नागनाथ महादेव पहुच कर दर्शन किये तत्पश्चात अपने काफिले के साथ नगर के मुख्य मार्गो से होते हुए रवाना हो गये । कार्यक्रम का सञ्चालन पालिका उपाध्यक्ष नितेश बैरागी ने किया कार्यक्रम में प्रदेश प्रभारी दिनेश भट्ट, प्रदेश उपाध्यक्ष हेमराज मीना, प्रदेश महामंत्री सुशील कटारा, निर्मला रावत, डूंगरपुर प्रधान सूर्या, राजेंद्र पाटीदार, भीमा भाई डामोर, जन आक्रोश यात्रा प्रभारी एडवोकेट भगवत पूरी, मधुसुधन व्यास, प्रधान कान्हेंग रावत, पालिका अध्यक्ष बबलू मईडा, मंडल अध्यक्ष जिनेन्द्र सेठिया, महामंत्री महावीर कोठारी, कलसिंह डामोर, रेखा जोशी, ललिता सोनी, दिलीप टेलर, नरेश गादीया, राहुल सोनी, रितेश गादीया, हिमांशु पंचाल बूथ अध्यक्ष कैलाश लक्षकार सोशल मीडिया संयोजक ललित प्रजापत एवं अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे।

# सेमलिया में सहस्त्र औदीच्य ब्राह्मण समाज चतुर्दश मंडल बांसवाड़ा की बैठक सामाजिक मसलों पर चर्चा

48 प्रतिभाओं का हुआ सम्मान समाज में महिला सहभागिता हेतु ग्राम इकाई में महिला मंडल के गठन का निर्णय

बांसवाडा ब्यूरो चीफ अरूण जोशी की रिपोर्ट

कुशलगढः औदीच्य ब्राह्मण समाज चतुर्दश मंडल का प्रतिभा सम्मान समारोह सेमलिया गाँव में हुआ समारोह की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष जितेंद्र पंड्या ने की मुख्य अतिथि जयंतीलाल जोशी और विशिष्ठ अतिथि धमार्चार्य डॉ. विकास भाई भट्ट बड़ोदिया, डॉ. जिमेश पंड्या, पूर्व तहसीलदार वनेश्वर पंड्या, चोखरा अध्यक्ष कमलनयन आचार्य, मणिलाल जोशी, हीरालाल त्रिवेदी, ईश्वरलाल पंड्या, सुधीर जोशी रहे स्वागत भाषण सेमलिया इकाई अध्यक्ष गिरीशचंद्र ठाकोर ने दिया जिला अध्यक्ष ने ग्राम इकाई पर महिला कार्यकारणी का गठन करने युवा पीढ़ी को हमारी संस्कृति व संस्कारो से परिपूर्ण करने करियर काउंसलिंग करने शिक्षा को बहतर आयाम देने के लिए सभी समाजजनो को आगे आने का आह्वान किया उन्होंने कहा की समाज के बदलाव में युवा और सुधार में महिलाओं की भूमिका अहम है समारोह में समाज की 48 प्रतिभाओं को प्रशस्ति पत्र, मोमेंटो और उपरणा ओढ़ाकर सम्मानित किया गया अगली बैठक समाज सेवी अशोक पंड्या द्वारा चिडियावासा में रखने का आग्रह किया जिसे समाजजनों ने स्वीकृति दी कार्यक्रम में जिला संरक्षक व सलाहकार डॉ. दिनेश भट्ट, जयप्रकाश पंड्या, दिपक जोशी, वासुदेव आसान, राजेश जोशी, रोशन जोशी, दिलीप पंड्या, वासुदेव पंड्या,राधेश्याम ठाकोर, नारायणलाल, लक्ष्मीनारायण उपाध्याय, नटवरलाल पंड्या, विश्वनाथ पंड्या, राजेंद्र पंड्या, सूरजलाल, डायालाल उपाध्याय, गौतमलाल, रमेश भट्ट, बापूलाल उपाध्याय, तुलसीराम जोशी, छगनलाल जोशी, दिनेश जोशी, राकेश जोशी, सुभाष मेहता, जितेंद्र पंड्या, किशोर पंड्या आदि समाजजन मौजूद रहे समारोह का संचालन डॉ. सुभाष जोशी ने किया व आभार राजेंद्र उपाध्याय ने जताया उक्त जानकारी मिडिया प्रभारी हेमंत पंड्या ने दी।

# तिजारा सम्मेद शिखर को पर्यटक स्थल बनाए जाने पर उपखंड अधिकारी को प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा

मरुधर विशेष राकेश सैनी

तिजारा सम्मेद शिखर को झारखंड सरकार द्वारा पर्यटक स्थल घोषित करने पर तिजारा जैन समाज ने परम पूज्य आचार्य श्री प्रशममूर्ति शांति सागर जी महाराज (छाणी) परंपरा के प्रमुख संत परम पूज्य आचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज के सानिध्य में विशाल रैली निकाली गई। अतिवीर जी मुनिराज ने हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया ।ऐतिहासिक तरीके से भव्य रैली निकाली गई और जैन समाज ने झारखंड के मुख्यमंत्री एवं देश के प्रधानमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। सम्मेद शिखर के कण-कण में तीर्थंकर वास करते हैं ।जैन धर्म के 20 तीर्थंकरों की निर्माण भूमि व करोड़ों मुनि भगवंत की साधना स्थली श्री सम्मेद शिखरजी पारसनाथ पर्वत पर किसी प्रकार की पर्यटन या अन्य गतिविधि अहिंसा प्रिय जैन समाज की भावनाओं से खिलवाड़ होगा जैन समाज बहुत ही सहिष्णु समाज है।। दान पुण्य में सबसे आगे रहता है।। हजारों सालों से अहिंसा का संदेश दिया है।। ऐसे समाज के प्रमुख तीर्थ स्थल को तीर्थ नगरी ही बनाकर रखना चाहिए रैली के दौरानपूर्व अध्यक्ष नरेंद्र जैन ,डब्बू जैन ,हुकम चंद जैन, सुभाष जैन, मनोज जैन, डिंपल जैन, संजय जैन पार्षद ,रवि जैन, राजेंद्र जैन ,राजू जैन, सचिन जैन ,अंशुल जैन, लोकेश जैन शंभू दयाल जैन, आदिश्वर जैन ,देहरा जैन मंदिर अध्यक्ष मुकेश जैन हितेश जैन, उमंग जैन ,देहरा जैन मंदिर मंत्री ललित जैन , कोषाध्यक्ष वरुण जैन, बिल्लू जैन, दीपक जैन, मंत्री भारत भूषण जैन ,जीवन धर,नरेंद्र जैन , कालू, राकेश जैन, सुरेश मास्टर जी अभय जैन, रमेश रोलिया सुभाष जैन निर्मल जैन कपिल जैन मिंकु जैन, निखिल जैन जतिन जैन आयुष जैन अभिषेक जैन देवेंद्र जैन ,अनिल जैन ,प्रवीण जैन अर्चित जैन ,सक्षम जैन, आशीष जैन, गुलशन जैन ,बंटी जैन जयकुमार जैन, रिंकू जैन, वीर सिंह जैन, बरकत जैन, नितिन जैन, बाबूलाल जैन ,राकेश जैन ,छोटू जैन ,राहुल जैन, पारस जैन ,निधि जैन, नेहा जैन ,सपना जैन, आशू जैन सविता जैन मीरा जैन नीरज जैन गीता जैन अमृता जैन चांदनी जैन शोभा जैन आशा जैन और अनेकों महिला मंडल मौजूद रहे ।संपूर्ण रैली में थाना अधिकारी सुरेंद्र शर्मा अपनी टीम के साथ मौजूद रहे।

# जिला कारागार का अपर जिला जज एफ 0 टी0 सी0/सचिव ने किया निरीक्षण

मरुधर विशेष/संवाददाता शिवकुमार मौर्य

प्रतापगढ़। माननीय उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ के दिशा निर्देश एवं माननीय जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण प्रदीप कुमार सिंह के मार्गदर्शन में 21 दिसम्बर 2022 को आयोजित विशेष जेल लोक अदालत के सन्दर्भ में जिला कारागार का नीरज कुमार बरनवाल अपर जिला जज, एफ0टी0सी0/सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ने निरीक्षण किया एवं बन्दियों को विधिक रूप से जागरूक किया। निरीक्षण के दौरान जेल अधीक्षक रमाकान्त द्वारा अवगत कराया गया कि जिला कारागार में 1170 बन्दी निरूद्ध है जिसमें 991 विचाराधीन बन्दी है। इसमें महिला 24 तथा 925 पुरूष एवं किशोर (18 से 21 वर्ष आयु समूह) बन्दियों की संख्या 42 है। सिद्धदोष बन्दियों की संख्या 170 बतायी गयी जिसमें 03 महिला बन्दी व 167 पुरूष बन्दी शामिल है। जेल में निरूद्ध महिला बन्दियों के साथ कुल 05 बच्चे रह रहे है। महिला बैरिक में निरूद्ध 01 महिला बन्दी गर्भवती बतायी गयी। सचिव द्वारा जिला कारागार में स्थित महिला बैरक, पाकशाला, जेल अस्पताल, लीगल एण्ड क्लीनिक एवं वीडियो कान्फ्रेसिंग रूम सहित जेल परिसर की साफ-सफाई, महिला बन्दियों की तलाशी रूम का निरीक्षण किया गया। प्रत्येक बैरिक में मनोरंजन के लिये टी0वी0 लगी है जो चालू हालत में बतायी गयी। इस अवसर पर जेल अधीक्षक को निर्देशित किया गया कि जिन बन्दियों को अपने मुकदमें की पैरवी हेतु निःशुल्क पैनल अधिवक्ता की आवश्यकता है उनके आवेदन पत्र लिखित रूप में प्राप्त करके उनके आवेदन पत्र रजिस्टर में अंकित करके जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कार्यालय को उपलब्ध कराये जिससे बन्दियों को उनके मुकदमें की पैरवी हेतु निःशुल्क अधिवक्ता उपलब्ध कराया जा सके। इस अवसर पर सचिव द्वारा जिला कारागार में निरूद्ध बन्दियों को उनके अधिकारों एवं प्लीबारगेनिंग के सम्बन्ध में विधिक जानकारी देते हुये जागरूक किया गया। निरीक्षण के दौरान उप जेलर द्वारा जानकारी दी गयी कि जेल में निरूद्ध अधिकांश सिद्धदोष बन्दियों की अपील हो चुकी है, जिन बन्दियों की अपील नही हुई है उनके अपील किये जाने हेतु कार्यवाही करायी जा रही है। जेल निरीक्षण के दौरान जेल अधिकारी को निर्देशित किया गया कि जिला कारागार की प्रतिदिन साफ-सफाई कराने, जेल में स्थापित लीगल एण्ड क्लीनिक को नियमित रूप से संचालित करते हुये अभिलेखों को दुरूस्त कराने एवं बन्दियों के बैरकों में सर्दी से बचाव हेतु समुचित व्यवस्था की जाय। जेल अस्पताल के निरीक्षण के दौरान डा0 प्रवीन रंजन व डा0 अरविन्द कुमार सरोज उपस्थित रहे। डा0 प्रवीन रंजन ने बताया कि मानसिक रूप से निरूद्ध एक बन्दी का इलाज लखनऊ में कराया जाना है जिसके लिये कार्यवाही की जा रही है। बीमारी से बचाव के लिये दवा का छिड़काव सभी बैरकों एवं जेल परिसर में कराना सुनिश्चित किया जाये। इस अवसर पर जेल अधीक्षक रमाकान्त, उपजेलर आफताब अहमद अंसारी व सुनील कुमार द्विवेदी उपजेलर उपस्थित रहे।

## उत्तर प्रदेश रायबरेली के डीह क्षेत्र पंचायत घिसिगढ़ में गरीबों को बांटे गया कम्बल

मरुधर विशेष/संवाददाता शिवकुमार मौर्य

विकास खंड डीह के प्राथमिक विद्यालय घिसिगढ़ में आज दिनांक 21 दिसंबर दिन बुधवार को सुबह करीब 11 बजे क्षेत्र पंचायत सदस्य घीसीगढ सुरुची ठाकुर पत्नी पूर्व ब्लाक प्रमुख विवेक विक्रम सिंह के द्वारा करीब 500 कंबल गरीबों में वितरण किया गया इस अवसर पर प्रधान दशरथ लाल यादव पारसनाथ उपाध्याय और प्रधान संघ अध्यक्ष रंजीत सिंह प्रधानाध्यापक रानालाल सिंह बंटेश सिंह अखिलेश सिंह शमशेर बहादुर शीतला प्रसाद आदि लोग मौजूद रहे

## पंकज खुराना इंटरनेशनल जर्नलिस्ट एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष बने

मरुधर विशेष/ विजय सिंह

खैरथल । इंटरनेशनल जर्नलिस्ट एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष मदन गोपाल तिवारी द्वारा पंकज खुराना को दिल्ली का प्रदेश अध्यक्ष मनोनीत किया गया है ।यह मनोनयन उन्होंने एसोसिएशन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बिजेंद्र कुमार जैमिनी राष्ट्रीय संगठन मंत्री देवेंद्र कुमार शर्मा व राष्ट्रीय प्रचार मंत्री कृष्णा मुरारी सर्राफ की अनुशंसा पर किया गया है।उन्होंने खुराना को नये सदस्यों को बनाने, कार्यकारिणी का गठन करने के अधिकार भी दिए हैं। पंकज खुराना को इंटरनेशनल जर्नलिस्ट एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष बनाए जाने पर विभिन्न संगठनों एवं क्षेत्र के पत्रकारों द्वारा उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं दी है। पंकज खुराना खैरथल प्रेस क्लब अध्यक्ष के पद पर रहते हुए पिछले लंबे समय से ग्रामीण पत्रकारों के हित में काम कर रहे हैं। इससे पहले खुराना को जर्नलिस्ट एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) के प्रदेश कार्यकारिणी में भी सदस्य मनोनीत किया गया है।

## जैन समाज के लोगों ने एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

मरुधर विशेष/ विजय सिंह

किशनगढ़ बास । जैन समाज के प्रतिनिधि मंडल ने एसडीएम को 20 जैन तीर्थ कारों और अनंत संतो की मोक्ष स्थल श्री सम्मेद शिखर जीपारसनाथ पर्वतराज गिरीहिड झारखंड की स्वतंत्र पहचान पवित्रता और संरक्षण को लेकर विश्व जैन संगठन के आव्हान पर 5 सूत्री मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपा है।जैन समाज के रमेश चंद जैन ने बताया कि जैन समाज के लोगों ने एसडीएम गंगाधर मीणा को महामहिम राष्ट्रपति प्रधानमंत्री एवं पर्यावरण वन मंत्री भारत सरकार वे मुख्यमंत्री झारखंड के नाम 20 जैन तीर्थ कारों और अनंत संतों की मोक्ष स्थल श्री सम्मेद शिखर जीपारसनाथ पर्वतराज गिरीहिड झारखंड की स्वतंत्र पहचान पवित्रता और संरक्षण को लेकर विश्व जैन संगठन की ओर से रखी गई पांच मांगों के समर्थन में ज्ञापन सौंपा है।ज्ञापन के दौरान रमेश चंद जैन, महेंद्र जैन, चंद्रशेखर जैन,अमित जैन, राकेश जैन,नीरज जैन, सतीश जैन, टीकम चंद जैन, अंकुर जैन आदि समाज के लोग मौजूद रहे।

## ग्राम पंचायत सहायक संघ, ब्लॉक सज्जनगढ़ की बैठक आयोजित हुई

बांसवाडा ब्यूरो चीफ अरूण जोशी की रिपोर्ट

बांसवाड़ा सज्जनगढ़ ग्राम पंचायत सहायक संघ, ब्लॉक सज्जनगढ़ की बैठक आज दिनांक 21 दिसंबर बुधवार को कस्बे के शिव मंदिर परिसर में आयोजित की गई। बैठक में वक्ताओं ने कहा कि वर्तमान में कार्यरत पंचायत सहायक जिन्होंने पूर्व में 2006 से 2014 तक विद्यार्थी मित्र के रुप में संविदा पर अपनी सेवाएं दी हैं। 2017 में तत्कालीन सरकार द्वारा पुनः संविदा पर पंचायत सहायक के पद पर नियुक्ति दी गई। उस समय आयु की गणना न्यूनतम 21 वर्ष एवं अधिकतम कोई सीमा नहीं रखी गई थी।वक्ताओं ने कहा कि वर्तमान में संविदा सेवा नियम-2022 के तहत विद्यालय सहायक के पद पर अडॉप्ट करने की प्रक्रिया में निर्धारित आयु 21 वर्ष से 40 वर्ष रखी गई है जिससे हजारों कार्यरत पंचायत सहायकों पर रोजी-रोटी छीनने का खतरा उत्पन्न हो गया है। बैठक में उपस्थित पंचायत सहायकों ने कहा कि संविदा कर्मियों द्वारा राज्य सरकार को अपनी बहुमूल्य सेवाएं देने तथा जीवन के अमूल्य 14-15 वर्ष संविदा सेवा में खपाने के बाद भी प्रदेश के 6000 से अधिक पंचायत सहायकों को समायोजन से वंचित किया जा रहा है। बैठक में उपस्थित वक्ताओं ने समायोजन से वंचित पंचायत सहायकों को शिथिलता प्रदान करते हुए शीघ्र राहत देने की मांग की गई। उन्होंने चेतावनी दी है कि अगर समय रहते समायोजन नहीं किया जाता तो आंदोलन किया जाएगा जिसकी समस्त जिम्मेदारी राज्य सरकार व प्रशासन की रहेगी। बैठक में जिला कोषाध्यक्ष वीरेंद्रसिंह चौहान,हिरालाल दामा, दादमचंद्र नाई, मोहनलाल डिंडोर,कचरू डिंडोर ,दिलीप पटेल, हवसिंह बारिया,प्रवीण कुमार पैल्या सहित कई पंचायत सहायक मौजूद रहे।

## विहिप का एक दिवसीय अभ्यास वर्ग 25 को

मरुधर विशेष फलोदी। फलोदी उपखंड मुख्यालय पर विश्व हिन्दू परिषद के तत्वाधान में मातृशक्ति एवं दुर्गावाहिनी की माताओं एवं बहिनों का एक दिवसीय वर्ग प्रातः 11 बजे से लेकर सांय 5 बजे तक लोट्स माइंड ग्लोबल स्कूल गायत्री कटले के पास में रखा गया है। विहिपजिलाध्यक्ष जयप्रकाश गुचिया ने बताया कि एक दिवसीय अभ्यास वर्ग में तुलसी पूजन का महत्व तथा सत्संग के माध्यम से संगठन की बात हर घर तक पहुंचाने, संगठन की कार्य प्रणाली तथा आत्मरक्षा के गुर सिखायें जायेगें। इसलिये कार्यकताओं द्वारा घर-घर जाकर जनसम्पर्क अभियान चलाया जा रहा है।

## फलोदी शहर में कल जलापूर्ति नही होगी

मरुधर विशेष फलोदी। फलोदी उपखंड मुख्यालय पर स्थित जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के फिल्टर प्लांट, विभिन्न पंप हाऊस पर रख-रखाव तथा पाईप लाईन संधारण को लेकर सम्पूर्ण फलोदी शहर में 23 दिसम्बर शुक्रवार को जलापूर्ति बंद रहेगी तथा 24 दिसम्बर शनिवार को जलापूर्ति की जायेगी। यह जानकारी जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग जिला खंड फलोदी के अधिषाशी अभियंता गणपत सिंह भाटी ने दी है।

## दिव्यांग विधार्थियों को ऊनी स्वेटर वितरित किये

मरुधर विशेष फलोदी ।फलोदी उपखंड मुख्यालय पर राईका बाग क्षेत्र में सुगन इंजीनियरिंग इंस्टीट्यूट के सामने नेत्रहीन विकास संस्थान जोधपुर द्वारा संचालित प्रज्ञा चक्षु उच्च प्राथमिक आवासीय विद्यालय फलोदी में बुधवार को शिक्षक कृष्ण कुमार थानवी राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय जागरिया ने विद्यालय के सभी दिव्यांग छात्र-छात्राओं को सर्दी से बचाव के लिये ऊनी स्वेटर तथा नाश्ते की प्लेटे एवं गिलासे वितरित की। इस अवसर पर शिक्षक थानवी ने दिव्यांग विधार्थियों से उनकी शैक्षणिक गतिविधियों के बारे में जानकारी ली। इस अवसर पर संस्था प्रधान श्रवणराम जयपाल, राजेन्द्र प्रसाद, विजयसिंह परिहार एवं जेठाराम चौहान आदि ने शिक्षक थानवी का आभार व्यक्त किया।

# वार्ड क्रमांक 5 में 25 वर्षों की समस्या का हुआ निराकरण, एल्डरमैन शकुंतला त्रिपाठी की पहल से वार्डवासियों में खुशी का माहौल , पूरे गली में 4 लाख 22 हजार की लागत से लगाए गए नए खम्भे ,,

पत्थलगांव - नगर के वार्ड क्रमांक 05 स्थित कश्मीरी गली में 25 वर्षों से झूलते हुए बिजली तार की समस्या का निराकरण अब हो गया है जिस समस्या को नगर की नामांकित पार्षद (एल्डरमैन) शकुंतला त्रिपाठी ने जोर शोर के साथ प्रमुखता से उठाया था एवं इस मामले को लेकर उन्होंने स्थानीय विभाग से लेकर राजधानी तक अपनी आवाज बुलंद की थी जिसके बाद विद्युत विभाग ने समस्या की गंभीरता को देखते हुए समस्या के लिए 4 लाख 22 हजार का टेंडर जारी किया था जिसके तहत अब वार्ड क्रमांक 05 कब कश्मीरी गली मोहल्ले में बिजली लोहे के पोल लगा दिए गए हैं एवं इसके साथ ही खुले तारों से निजात के लिए पूरे मोहल्ले में सिंगल केबल भी लगाया जाएगा जो कार्य जारी है। जिसके बाद अब इस कार्य के बाद मोहहलेवासियों में इसके लिए बेहद खुशी है क्योंकि यह कार्य दशकों से रुका हुआ था जिसे आज पूरा होते देखा जा रहा है ।

एल्डरमैन शकुंतला त्रिपाठी ने बताया कि नागरिकों की वर्षों की इस समस्या के लिए उन्होंने स्थानीय विधायक रामपुकार सिंह से लेकर विद्युत विभाग के एमडी सहित आला अधिकारियों तक इस समस्या को उनके सामने रखा था जिसकी गंभीरता को देखते हुए सभी ने इस बात को प्रमुखता से लिया और देखा कि वास्तविक में यह समस्या वर्षो

से गंभीर है एवं जस की तस पड़ी हुई है जिसकी ओर ध्यान देने में यहां के पार्षद ने कोई रुचि लंबे समय तक नही दिखाई जिससे समस्या विक्राल होती चली गई जिसके बाद वार्डवासियों ने इस समस्या को एल्डरमैन को बताते हुए सामने रखा जिसके बाद अब समस्या का समाधान कर लिया गया है जिससे वार्डवासी बेहद खुश हैं ।

### एल्डरमैन ने दिलाई निजात

वार्डवासी सुनील गर्ग ने इस समस्या के निजात के लिए नामांकित पार्षद शकुंतला त्रिपाठी को इसके लिए बधाई दी है साथ ही उनका आभार जताया है श्री गर्ग ने कहा कि इस वार्ड की समस्या के लिए स्थानीय पार्षद का रवैया हमेशा कमजोर रहा है उन्होंने कहा कि छग शासन द्वारा मनोनीत पार्षद शकुंतला त्रिपाठी को जैसे ही सभी ने समस्या के बारे बताया तो तत्काल उन्होंने कार्रवाई करते हुए इस दिशा में ठोस कदम उठाकर कार्रवाई की है जो काबिले तारीफ है क्योंकि वर्षों से जनता झूलते हुए तारों से परेशान थी जिसका निराकरण अब हो सका है जिसके लिए अब वार्डवासियों ने खुशी जताते हुए उन्हें धन्यवाद ज्ञापित किया है ।

# समर्थन मूल्य पर प्रदेश अब तक 63.86 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी

15.93 लाख किसानों ने बेचा धान, धान के एवज में 13,283 करोड़ का हुआ भुगतान

कस्टम मिलिंग के लिए 38.55 लाख मीट्रिक टन धान का हुआ उठाव

मरूधर विशेष छत्तीसगढ़

रायपुर, 21 दिसम्बर 2022/ छत्तीसगढ़ में धान खरीदी महाभियान के तहत समर्थन मूल्य पर किसानों से अब तक 63.86 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी की गई है। जो राज्य सरकार द्वारा इस वर्ष 110 लाख मीट्रिक टन धान खरीदी का लक्ष्य का 69 प्रतिशत है। धान खरीदी के एवज में राज्य के 15.93 लाख किसानों को 13,283 करोड़ रूपए का भुगतान बैंक लिंकिंग व्यवस्था के तहत किया गया है। पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी धान खरीदी के साथ-साथ कस्टम मिलिंग के लिए निरंतर धान का उठाव जारी है। अब तक 47.95 लाख मीट्रिक टन से अधिक धान के उठाव के लिए डीओ जारी किया गया है, जिसके एवज में मिलर्स द्वारा 38 लाख 55 हजार मीट्रिक टन धान का उठाव किया जा चुका है।खाद्य विभाग के सचिव श्री टोपेश्वर वर्मा ने बताया कि इस साल

**छत्तीसगढ़ में धान खरीदी महाभियान के तहत समर्थन मूल्य पर किसानों से अब तक 63.86 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी की गई है। जो राज्य सरकार द्वारा इस वर्ष 110 लाख मीट्रिक टन धान खरीदी का लक्ष्य का 69 प्रतिशत है। धान खरीदी के एवज में राज्य के 15.93 लाख किसानों को 13,283 करोड़ रूपए का भुगतान बैंक लिंकिंग व्यवस्था के तहत किया गया है। पिछले वर्ष की तरह इस वर्ष भी धान खरीदी के साथ-साथ कस्टम मिलिंग के लिए निरंतर धान का उठाव जारी है। अब तक 47.95 लाख मीट्रिक टन से अधिक धान के उठाव के लिए डीओ जारी किया गया है, जिसके एवज में मिलर्स द्वारा 38 लाख 55 हजार मीट्रिक टन धान का उठाव किया जा चुका है।**

राज्य में 25.92 लाख किसानों का पंजीयन हुआ है, जिसमें लगभग 2.26 लाख नये किसान शामिल हैं। राज्य में धान खरीदी के लिए 2600 उपार्जन केन्द्र बनाए गए हैं। सामान्य धान 2040 रूपए प्रति क्विंटल तथा ग्रेड-ए धान 2060 रूपए प्रति क्विंटल की दर से खरीदा जा रहा है। राज्य में धान खरीदी की व्यवस्था पर कड़ी निगरानी रखी जा रही है। सीमावर्ती राज्यों से धान के अवैध परिवहन को रोकने के लिए चेक पोस्ट पर माल वाहकों की चेकिंग की जा रही है। अधिकारियों ने बताया कि आज 21 दिसम्बर को लगभग 58 हजार किसानों से 2 लाख मीट्रिक टन से अधिक धान की खरीदी की गई है, इसके अलावा ऑनलाइन प्राप्त टोकन के जरिए किसानों से लगभग 74 हजार टन धान की भी खरीदी हुई हैं। आगामी दिवस की धान खरीदी के लिए 71,290 टोकन तथा ह्वटोकन तुंहर हाथ एपह्व के जरिये 15,137 टोकन ऑनलाइन जारी किए गए हैं।

# मछली पालन से महिला स्व सहायता समूह स्वावलंबन की ओर अग्रसर, मनरेगा का तालाब बना संसाधन

मरूधर विशेष राकेश कुमार बंसल एमसीबी छत्तीसगढ़

बैकुण्ठपुर/एमसीबी ! महात्मा गांधी नरेगा और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन बिहान के माध्यम से महिलाओं के उत्थान की प्रक्रिया जिले में निरंतर प्रगतिरत है। महिलाओं के संगठनात्मक एकता को स्वावलंबन की दिशा में आगे ले जाने के लिए महात्मा गांधी नरेगा के संसाधन भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। गांव के एक तालाब की स्थिति अच्छी नहीं थी परंतु महात्मा गांधी नरेगा के तहत उसके जीर्णोद्धार से अब गांव की महिलाओं को एक निश्चित आय का साधन प्राप्त हो गया है। यह सफल कार्य एमसीबी जिले के जनपद पंचायत मनेन्द्रगढ़ अंतर्गत ग्राम पंचायत महाई में महिलाओं के समूह ने कर दिखाया है। ग्राम पंचायत महाई के ग्राम लामदाही स्कूल पारा में बने तालाब की स्थिति अच्छी नहीं होने के बाद उसमें ग्राम सभा के प्रस्ताव के आधार पर मनरेगा से गहरीकरण कार्य पूर्ण हो जाने के बाद मां भवानी महिला स्व सहायता समूह की महिलाओं ने मछली पालन का रोजगार प्रारंभ किया। इस स्वरोजगार से हर माह महिला समूह को पांच से छ हजार रूपए की अतिरिक्त आमदनी प्राप्त होने लगी है। आने वाले गर्मियों तक यह लाभ और भी ज्यादा होने की उम्मीद है। ग्राम पंचायत महाई के समूह की महिलाओं को स्वावलंबन की दिशा में यह कार्य महती भूमिका निभा रहा है। मां भवानी महिला समूह की अध्यक्ष श्रीमती गौरावती और सचिव श्रीमती

अनुराधा सिंह ने बताया कि पहले गांव के इस तालाब का हम लोग केवल दैनिक उपयोग के लिए पानी लेते थे। वर्षों पूर्व बने तालाब का सतत उपयोग के बाद गाद होने के कारण जलभराव कम हो गया था, जिससे यह तालाब ठंड के बाद सूखने लगता था। उसके बाद ग्राम पंचायत की सरपंच श्रीमती अगसिया बाई से इस तालाब को गहरीकरण कराए जाने की मांग पर ग्राम सभा में इसके लिए प्रस्ताव पारित कर जनपद पंचायत को भेजा गया। ग्राम पंचायत के प्रस्ताव पर महात्मा गांधी नरेगा के तहत जिला पंचायत से वर्ष 2019-20 में तालाब के गहरीकरण के लिए 4 लाख 30 हजार रुपए स्वीकृत हुए। ग्राम पंचायत द्वारा लगभग तीन माह माह में ही तालाब का गहरीकरण कार्य पूरा कराया गया और गत वर्ष बारिश के बाद से इसमें मछली पालन का कार्य समूह की महिलाओं को प्राप्त हुआ। समूह की महिला सदस्य श्रीमती उर्मिला, सुमित्रा, सीतादेवी सहित अन्य सदस्यों ने अपने परिजनों के साथ मिलकर इस तालाब में मछली पालन का कार्य प्रारंभ किया। इस कार्य प्रारंभ में उन्हे बिहान से प्राप्त अनुदान राशि के माध्यम से बीज के रूप में 12 हजार की लागत आई। अब तक यह समूह लगभग 45 हजार रुपए की मछली बाजार में बेचकर लाभ कमा चुका है। समूह के सदस्यों ने बताया कि अभी और लाभ होने की उम्मीद है। कुल मिलाकर एक छोटा सा संसाधन अब महिलाओं के परिवार के लिए एक अतिरिक्त आमदनी का अच्छा साधन बन गया है।

# तीर्थों को पर्यटन स्थल नहीं उनकी पवित्रता कायम रखने के प्रयास करे सरकार

इन दिनों देशभर में पवित्र तीर्थ श्री सम्मेद शिखर जी का विषय जन आंदोलन का रूप धारण करता जा रहा है । झारखंड के गिरिडीह में स्थित संतो की तपोभूमि और मोक्ष भूमि को सरकार ने पर्यटन स्थल घोषित कर दिया जिसका पूरे देश में विरोध किया जा रहा है और यह उचित भी है। भारत केवल एक देश नहीं अपितु देवभूमि है क्योंकि यहाँ पर देवता मनुष्य रूप में अवतरित हुए हैं और उन्होंने हमें धर्म और कर्म के बारे में मानव रूप में विस्तार से समझाया है जिसका सभी धर्मावलंबी अनुसरण करते हैं और जब हमारी आस्था पर चोट लगती है तो आक्रोश स्वतः ही उत्पन्न हो जाता है। वैसे भी सरकार को धार्मिक आस्था जैसे मसलों पर हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए क्योंकि भारत में विविध धर्मों के अनुयायी अपनी परंपरा और रीतिरिवाजों के साथ अपने धर्म का पालन करते हैं । ऐसे में जब उन्हें लगता है कि सरकार या अन्य कोई उनकी धार्मिक भावनाओं को आहत कर रहा है तो विरोध शुरू हो जाता है जिससे सामाजिक सन्तुलन नियंत्रण रखने में असुविधा होती है। देश का संविधान किसी को भी इस बात की अनुमति नहीं देता क्योंकि संविधान में सब कुछ मर्यादित है।

सम्मेद शिखर जी हो या अन्य कोई भी

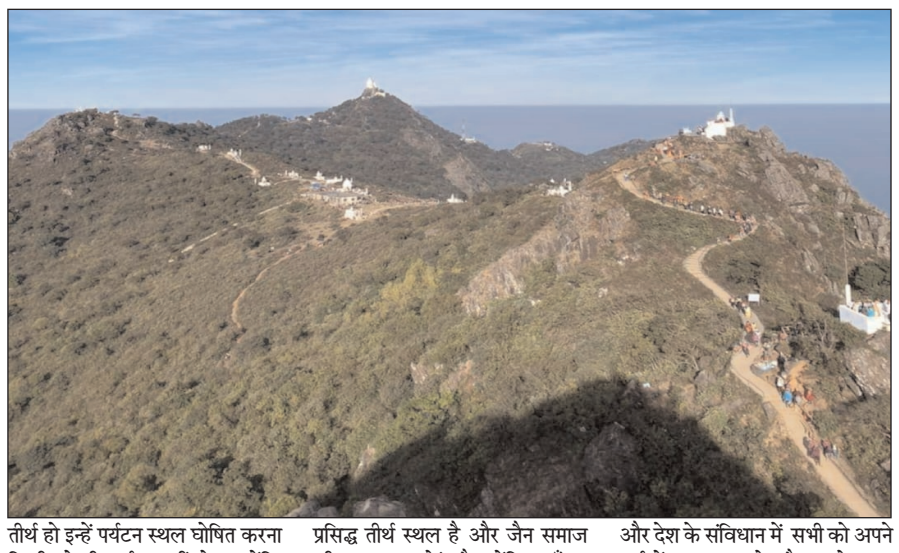

तीर्थ हो इन्हें पर्यटन स्थल घोषित करना किसी को भी बर्दाश्त नहीं होगा क्योंकि इसके पीछे सरकार की मंशा सीधे पर्यटन को बढ़ावा देना हो सकती है क्योंकि सरकार को तो पर्यटन से मोटी कमाई मिलेगी लेकिन उनकी पवित्रता नहीं बच सकती क्योंकि जहां पर्यटन बढ़ेगा वहां मांस,मदिरा का भी व्यापार होगा और इसके अलावा बहुत से अन्य गैरकानूनी कार्य भी होंगे जिनका उल्लेख सार्वजनिक रूप से उचित नहीं होगा। श्री सम्मेद शिखर जी देश का प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है और जैन समाज की आस्था का केंद्र है क्योंकि यहाँ पर जैन समाज के 24 तीर्थंकरों में से 20 तीर्थंकरों ने मोक्ष की प्राप्ति की जिनमें 23 वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ ने भी यहीं पर निर्वाण प्राप्त किया था इसलिए इसका धार्मिक महत्व है और इसकी पवित्रता को बचाने के लिए लोग संघर्ष कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में लोगों का आक्रोश फूटना स्वाभाविक है क्योंकि भारत देश की आत्मा धर्म ही है । यहां अनेक धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं और देश के संविधान में सभी को अपने धर्म में आस्था रखने और उसके साथ जीने का पूरा अधिकार प्राप्त है।

आज दुनिया में भारतीय सनातन संस्कृति का बोलबाला है लोग हमारी संस्कृति का अनुसरण कर रहे हैं और यहाँ की सरकारें अपने स्वार्थ के लिए धार्मिक आस्था की पवित्रता को कायम रखने की बजाए उसे खण्डित करने जैसे फरमान जारी कर रही है जो उचित नहीं है लेकिन सरकारों को भी यह नहीं भूलना चाहिए कि जब आस्था पर चोट लगती है तो सरकारें पलट जाया करती हैं।

हम बात करते हैं जैन धर्म की तो जिसका सीधा सा उद्देश्य, सन्देश,धारणा, मन्तव्य या सारांश एक ही बात में निहित है ₹ जियो और जीने दो ₹। इसी बात के गर्भ में चलते जाओ आपको पूरे जैन धर्म के दर्शन हो जाएंगे। जिस धर्म की विशेषता समाज को सदमार्ग पर लाने,विश्व कल्याण की भावना,प्राणी मात्र की रक्षा, दया, समर्पण और सबसे बड़ी विशेषता त्याग हो उसकी भावनाओं को आहत करना कहाँ तक उचित है ? जैन धर्म के अनुयायी अपनी अथाह सम्पत्ति को ठोकर मार कर दीक्षा ग्रहण कर देश,धर्म और समाज के कल्याण हेतु निकल पड़ते हैं ऐसे उदाहरण अन्य जगह यदा कदा ही देखने को मिलते हैं। मेरा उद्देश्य किसी धर्म की एक दूसरे से तुलना करना नहीं है अपितु विषय वस्तु की सच्चाई को बयां करना है क्योंकि भारत भूमि संतों और धर्मों की भूमि है। खासकर जैन धर्म सदैव अहिंसा और विश्व कल्याण की भावनाओं के साथ दुनिया का मार्गदर्शन करता है ऐसे अहिंसा के पुजारियों की आस्था पर चोट सर्वथा अनुचित है।

भारत देश कभी विश्व गुरु हुआ करता था और वर्तमान में भी विश्व गुरु बनने की ओर अग्रसर है । यहाँ पर स्वयं ईश्वर ने मानव रूप में अवतरित होकर लोगों को जीवन के विविध रूपों से अवगत कराया। भगवान श्री राम ने सांसारिक जीवन में मयार्दा का संदेश दिया जिससे वे मयार्दा पुरुषोत्तम कहलाए,श्री कृष्ण ने कर्म का संदेश दिया और वे कर्मयोगी कहलाए,महावीर ने अहिंसा का संदेश दिया और वे अहिंसा के प्रवर्तक कहलाए,गौतम बुद्ध ने करुणा का संदेश दिया और गुरूनानक देव जी ने ईमानदारी और परिश्रम से उदरपूर्ति कर सदैव प्रसन्न रहने का सन्देश दिया। इनके अलावा ऐसे कई देव स्वरूप अवतारों ने इस धरा पर अवतरित होकर इसे देवभूमि बनाया है। ऐसे में झारखण्ड सरकार द्वारा पवित्र तीर्थ सम्मेद शिखर जी को पर्यटन स्थल घोषित करने का तुगलकी फरमान उसकी पवित्रता पर चोट होने के साथ करोड़ो लोगों की भावनाओं और आस्था से खिलवाड़ है जो सर्वथा अनुचित है। झारखण्ड सरकार को अपने आदेश पर पुनर्विचार कर इसे निरस्त करना चाहिए। केंद्र सरकार हो या राज्य सरकारें सभी को इस तरह के निर्णयों से बचना चाहिए । तीर्थों को पर्यटन स्थल नहीं अपितु उनकी पवित्रता कायम रखने के प्रयास सरकारों को करने चाहिए क्योंकि ये सीधे आमजन की भावनाओं से अधिक आस्था से जुड़े होते हैं।

## भरतपुर-सोनहत विधानसभा: पढ़ेगी बेटी-आगे बढ़ेगी बेटी, जहां बेटियां पढ़ेगी वहां विकास भी बढ़ेगा

मरूधर विशेष राकेश कुमार बंसल एमसीबी छत्तीसगढ़

दूर दराज से आने वाली छात्राओं को अब स्कूल आना होगा आसान- विधायक गुलाब कमरोसविप्रा उपाध्यक्ष एवं विधायक गुलाब कमरो ने हायर सेकण्डरी स्कूल नागपुर में मां सरस्वती की विधिवत पूजा अर्चना कर सरस्वती सायकल योजना तहत 71 छात्राओ को सायकल वितरण कर उनके उज्ज्वल भविष्य हेतु की कामना इस अवसर पर जनपद उपाध्यक्ष राजेश साहू,प्राचार्य गिरीश कुरचानिया सहित सम्मानीय जनप्रतिनिधिगण,शिक्षक - शिक्षिकाएं व छात्राओ की रही गरिमामय उपस्थिति

## पत्रकार ने नर्स से किया घटिया काम, बनाया Video, फिर शुरू हुआ ब्लैकमेल का खेल, की ये डिमांड

मरुधर विशेष करन सोनी

सीतापुर. एक स्थानीय पत्रकार पर एक नर्स से छेड़छाड़ करने और उसका वीडियो और फोटो वायरल न करने के लिए 5 लाख रुपए की मांग करने का आरोप लगा है. एफआईआर के अनुसार, एन.के. अवस्थी नामक शख्स ने सीतापुर के एक प्रमुख हिंदी डेली का स्थानीय पत्रकार होने का दावा किया है.शिकायतकर्ता से उसकी दोस्ती हो गई, जो जिला अस्पताल में स्टाफ नर्स थी. नर्स ने अपनी शिकायत में कहा कि, अवस्थी एक अन्य व्यक्ति के साथ इलाज के लिए अस्पताल आया था. बाद में वह और अवस्थी दोस्त बन गए और अवस्थी नियमित रूप से उसके घर आने-जाने लगा और एक बार जब अवस्थी उसके घर आया तो उसके साथ छेड़छाड़ करने लगा.नर्स ने दावा किया कि, अवस्थी ने उसके वीडियो और फोटो भी लिए और उन्हें वायरल न करने के लिए 5 लाख रुपए की मांग की. नर्स ने पुलिस को बताया कि, आरोपी ने उसके घर के बाहर जातिसूचक टिप्पणियां कीं, उसकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर प्रसारित कर उसकी प्रतिष्ठा खराब करने की धमकी दी और उसकी बेटी को जान से मारने की धमकी भी दी.पुलिस ने कहा कि, आरोपी के खिलाफ धारा 452, धारा 354 बी, 506, एससी/एसटी अधिनियम सहित आईपीसी की विभिन्न धाराओं के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई है और मामले की जांच की जा रही है.

## सिंहदेव ने अपने बयान पर दी सफाई, कहा- कांग्रेस में कोई भी अपने से मुख्यमंत्री नहीं बनता, आलाकमान तय करता है सबकुछ

मरुधर विशेष करन सोनी

मंत्री टीएस सिंहदेव ने चुनाव से पहले भविष्य को लेकर निर्णय लिए जाने वाले बयान पर सफाई दी है. उन्होंने कहा कि कांग्रेस में अपने से कोई भी मुख्यमंत्री नहीं बनता, न बन सकता है. सबकुछ हाईकमान तय करता है. साथ ही भाजपा पर उन्होंने हमला करते हुए कहा कि उन्हें लगता है कहीं आग लगी है, तो हवा दे दो. बीजेपी को अपना काम देखना चाहिए. अब तो उनके पास केवल 14 विधायक ही बचे हैं. दरअसल, मंत्री टीएस सिंहदेव ने मंगलवार को कार्यकताओं की बात पर कहा था वे चुनाव से पहले अपने भविष्य को लेकर कोई निर्णय लेंगे. मीडिया में बयान के सामने आते ही सियासत तेज हो गई थी. नेता प्रतिपक्ष नारायण चंदेल ने तंज कसते हुए कहा था सिंहदेव ने व्यथित होकर सरकार के खिलाफ बयान दिया. ये इस बात का संकेत है कि छत्तीसगढ़ में एकला चलो की नीति चल रही है.उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार में कोई टीम वर्क नहीं है. इससे पहले भी सरकार के एक वरिष्ठ मंत्री ने कामकाज की आलोचना की. सिंहदेव घोषणा पत्र समिति के संयोजक थे. जनता उनसे वादों को पूरा नहीं करने का सवाल उठा रही है. इससे व्यथित होकर उन्होंने ऐसा बयान दिया है. ये बताता है कि कांग्रेस के भीतर क्या चल रहा है.

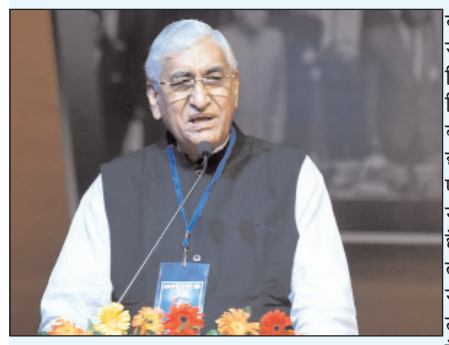

## पिकअप में भरकर पशुओं की तस्करी, अंधेरे का फायदा उठाकर भागे आरोपी

मरुधर विशेष करन सोनी

जिला /सरगुजाः- सीतापुर क्षेत्र में निरीह जानवरों की अवैध रूप से की जाने वाली तस्करी रुकने का नाम नही ले रही है। बीती रात पशुओं को क्रूरतापूर्वक भरकर तस्करी के लिए ले जा रहे पिकप को पुलिस ने लोगो के सहयोग से धर दबोचा। इस दौरान मौका देख आरोपी अंधेरे का लाभ उठा साथियों संग मौके से फरार हो गया इस मामले में पुलिस ने छतीसगढ़ कृषक पशु परिरक्षण अधिनियम के तहत कार्रवाई करते हुए फरार तस्करों की गिरफ्तारी के लिए तलाशी अभियान छेड़ दी है। पशु तस्करी में लिप्त पिकअप संग मवेशियों के पकड़े जाने की खबर सुन काफी संख्या में लोग थाने में जमा हो गए थे। इस दौरान बजरंग दल एवं हिंदूवादी संगठनों के सदस्य भी थाने पहुँचे और तस्करों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की मांग की जानकारी के अनुसार, बीती रात ग्राम ढेकीड़ोली में पशुओं को क्रूरतापूर्वक पिकप क्रमांक खल01/उव/4603 में भरकर पशु तस्कर बूचड़खाने ले जा रहे थे। इस बात की भनक लगते ही ग्रामीणों ने गौ सेवा समिति के सदस्य वशिष्ठ दास समेत पुलिस को इस मामले से अवगत करा दिया। सूचना पाते ही पुलिस एवं गौ सेवा समिति के सदस्य वशिष्ठ दास अपने साथी भवानी सिंह संग देर रात मौके पर पहुँचे और पशुओं से लदी पिकप को धर दबोचा इस बीच अंधेरे का लाभ उठा आरोपी साथियों संग मौके से फरार हो गया। पुलिस ने पशु तस्करी में संलिप्त पिकप को जब्त कर थाने ले आई और उसमें मौजूद सात नग मवेशी को ग्राम सोनतराई स्थित गौशाला के सुपुर्द कर दिया। क्रूरतापूर्वक किये जा रहे पशु तस्करी मामले में पुलिस ने उदय चौहान के विरुद्ध छत्तीसगढ़ कृषक पशु परिरक्षण अधिनियम की धारा 4,6,10 के तहत अपराध दर्ज कर लिया है। फिलहाल सारे आरोपी फरार है। जिनकी तलाश में पुलिस ने तलाशी अभियान छेड़ दी है। इस संबंध में थाना प्रभारी शिशिरकांत सिंह ने कहा कि जल्द ही सारे आरोपी पुलिस की गिरफ्त में होंगे।

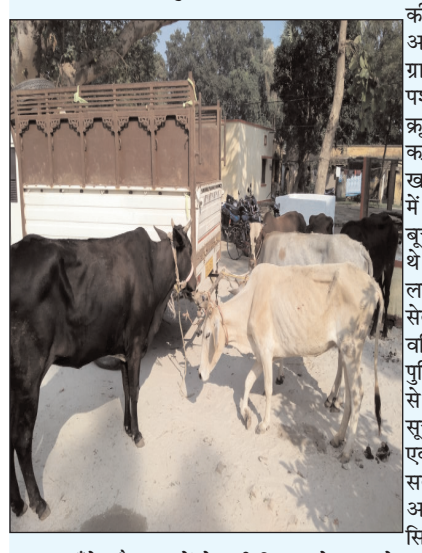

## खेलकूद का आयोजन स्वस्थ समाज के लिए आवश्यक-देवेन्द्र तिवारीभखार में डाउन टाउन फुटबॉल प्रतियोगिता का उद्घाटन

मरुधर विशेष करन सोनी

बैकुंठपुर के ग्राम भखार में डाउन टाउन फुटबॉल कप टूनार्मेंट का शुभारंभ पूर्व जिपं सदस्य एवं भाजपा जिला उपाध्यक्ष देवेन्द्र तिवारी के मुख्य आतिथ्य में हुआ। इस अवसर पर पहला मैच कोरिया और कटगोड़ी की टीम के मध्य

खेल की शुरूआत श्री तिवारी द्वारा मैदान के मध्य खिलाड़ियों से परिचय उपरांत शुरू हुआ।श्री तिवारी ने आयोजन समिति को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि हर वर्ष ग्रामीण क्षेत्रों में युवा अत्यंत उत्साह के साथ इस तरह के आयोजन कराते हैं जो अत्यंत सराहनीय है। श्री तिवारी ने कहा कि खेलकूद से युवाओं के शारीरिक एवं मानसिक शक्ति में मजबूती आती है।साथ ही अनुशासन व भाईचारे की भावना का भी विकास होता है।श्री तिवारी ने कहा कि ग्रामीणों द्वारा बिना किसी सरकारी सहायता के ऐसे आयोजन कराना निश्चित ही सराहनीय है। कार्यक्रम का संचालन कृष्णा वैष्णव एवं संजय चिकंजूरी ने किया। इस आयोजन में प्रमुख रूप से साथ भाजयुमो जिला महामंत्री शारदा गुप्ता, आईटी सेल के प्रदेश कार्यसमिति सदस्य व जिला कार्यालय मंत्री तीरथ राजवाड़े, भाजयुमो जिला उपाध्यक्ष सतेंद्र राजवाड़े, भाजयुमो नेता संतोष यादव,कृष्ण कुमार, सरपंच श्री चंद्र कुमार पैकरा, मोहित पैकरा, सीता पैकरा ,रमेश सिंह, लल्ला यादव सहित गणमान्य नागरिक एवं कमेटी के पदाधिकारी मौजूद रहे।

## नए जिले के विकास के लिए कई नए काम होंगे, अधिकारी जिम्मेदारी से काम करें: मुख्यमंत्री बघेल

मरूधर विशेष छत्तीसगढ़

रायपुर, 21 दिसम्बर 2022/ मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने आज नवगठित सारंगढ़-बिलाईगढ़ जिले भेंट-मुलाकात के दौरान बिलाईगढ़ रेस्ट हाउस में अधिकारियों की समीक्षा बैठक ली। मुख्यमंत्री बघेल ने आम जनता से आदिम जाति विकास

विभाग के बारे में मिली लेन-देन की शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए शिकायतों की जांच कर उसके निराकरण के निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि सारंगढ़-बिलाईगढ़ नया जिला बना है। इस नए जिले के विकास के लिए कई नए कार्य कराए जाएंगे। अधिकारी जिले के विकास के लिए मेहनत, जवाबदारी और बेहतर तरीके से काम करें। उन्होंने कहा कि जिले में गौठानों का तेजी से निर्माण करें, यह रोजगार का अच्छा जरिया है। इससे पलायन रोक सकते हैं। मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने इस अवसर पर बिलाईगढ़ स्थित रेस्ट हाउस में पौधा भी लगाया।मुख्यमंत्री बघेल ने अधिकारियों को नये परिवारों के राशन कार्ड और सांवरा जाति के बच्चों के लिए जाति प्रमाण पत्र बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने योजनाओं की समीक्षा करते हुए कहा कि जिन स्थलों पर सामुदायिक और व्यक्तिगत वनाधिकार की शिकायतें सामने आई हैं, उसका प्राथमिकता से निराकरण करें। धान खरीदी में कोई शिकायत नहीं आई है, बस पेमेंट सिस्टम देख लें। मुख्यमंत्री ने कहा कि यह दुर्गम क्षेत्र नहीं है, यहां बिजली की शिकायत बिल्कुल नहीं आनी चाहिए। विशेषकर मध्य के जिलों में समस्या नहीं होनी चाहिए। इस अवसर पर आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास मंत्री डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम, बिलाईगढ़ विधायक एवं संसदीय सचिव चंद्रदेव प्रसाद राय, मुख्यमंत्री के सचिव अंकित आनंद, बिलासपुर संभाग के कमिश्नर डॉ. संजय अलंग, पुलिस महानिरीक्षक बी.एन. मीणा, सारंगढ़-बिलाईगढ़ कलेक्टर डॉ. फरिहा आलम सिद्धिकी, बलौदाबाजार-भाटापारा कलेक्टर रजत बंसल भी उपस्थित थे।

## खाद्यमंत्री अमरजीत भगत के स्वागत के दौरान आयोजित रैली में बड़ी संख्या में नागरिक हुए शामिल

मरुधर विशेष करन सोनी

सीतापुर - कैबिनट मंत्री अमरजीत भगत ने बुधवार को आरक्षण के मुद्दे पर महत्वपूर्ण निर्णय लिए जाने पर मुख्यमंत्री को आभार व्यक्त करने रैली का आयोजन किया जिसमें जनप्रतिनिधि, कार्यकर्ता व स्थानीय लोगो ने अपनी उपस्थिति देकर रैली को सफल बनाया।बुधवार को सीतापुर में स्थानीय लोगों और जनप्रतिनिधियों द्वारा आरक्षण के मुद्दे पर महत्वपूर्ण पहल करने वाली कांग्रेस सरकार और मुख्यमंत्री भूपेश बघेल का आभार व्यक्त करते हुए कैबिनेट मंत्री अमरजीत भगत के नेतृत्व में वृहद पैदल रैली निकाली गयी।कैबिनेट मंत्री अमरजीत भगत ने कहा कि स्थानीय लोगो के हक के लिए मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने आरक्षण के फैसले पर महत्वपूर्ण निर्णय लिया है, सीतापुर विधानसभा की तरफ से उनका आभार व्यक्त करने के लिए पैदल रैली का आयोजन किया गया जिसमें स्थानीय जनप्रतिनिधि, कार्यकर्ता व स्थानीय लोग भी उपस्थित रहे।

## मुख्यमंत्री के निर्देश पर त्वरित अमल ,बलौदाबाजार-भाटापारा जिले के प्रभारी सहायक आयुक्त ट्रायबल का स्थानांतरण

मरूधर विशेष छत्तीसगढ़

रायपुर/ मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने बिलाईगढ़ विधानसभा क्षेत्र में भेंट-मुलाकात के दौरान आम जनता से आदिम जाति विकास विभाग के बारे में मिली लेन-देन की शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए आज बिलाईगढ़ में आयोजित समीक्षा बैठक में संबंधित अधिकारी का स्थानांतरण करने और शिकायतों की जांच के निर्देश दिए थे। मुख्यमंत्री के निदेशों पर त्वरित अमल करते हुए बलौदाबाजार-भाटापारा जिले के आदिवासी विकास विभाग के प्रभारी सहायक आयुक्त पी.सी. लहरे की सेवाएं मूल विभाग में वापस लेते हुए आगामी आदेश तक उन्हें संचालक, आदिम जाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान नवा रायपुर में पदस्थ किया गया है। पी.सी. लहरे का मूल पद अनुसंधान अधिकारी है। आज दोपहर मंत्रालय से आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास विभाग द्वारा इस आशय का आदेश जारी कर दिया गया है। मुख्यमंत्री ने बिलाईगढ़ में कहा कि भेंट-मुलाकात के दौरान जहां शिकायतें आ रही हैं, वहां कार्रवाई भी हो रही है। उन्होंने कहा कि आम जनता को असुविधा नहीं होनी चाहिए और यदि कोई समस्या है तो उसका समाधान भी हो।

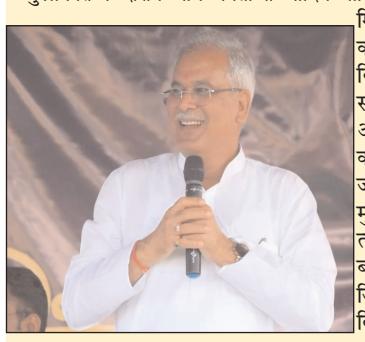

# ओबीसी अधिकार मंच राजस्थान के प्रदेश संयोजक डॉ नरेश पटेल ने की राहुल गांधी से भेंट

बांसवाडा ब्यूरो चीफ अरूण जोशी की रिपोर्ट

बांसवाडाः कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा वर्तमान सांसद राहुल गांधी के भारत जोड़ो यात्रा के राजस्थान के दौरे पर ओबीसी अधिकार मंच राजस्थान के प्रदेश संयोजक डॉ नरेश पटेल ने सामाजिक न्याय तथा ओबीसी के मुद्दो पर मुलाकात की । मुलाकात के दौरान राहुल गांधी ने कहा कि देश के निर्माण में ओबीसी वर्ग का महत्वपूर्ण योगदान हैं, सभी वर्गो के साथ साथ कांग्रेस पार्टी ओबीसी वर्ग के उत्थान के लिए ओबीसी वर्ग के साथ खड़ी हैं। कांग्रेस पार्टी ओबीसी वर्ग की जातिगत जनगणना और अन्य समस्याओं के समाधान के लिए संसद में और संसद के बाहर भी प्रतिबद्ध हैं।डा पटेल ने राहुल गांधी को मुलाकात के वक्त ज्ञापन सौंपा जिसमें यूपीए के समय की गई ₹सामाजिक, आर्थिक और जातिगत जनगणना₹ के आंकड़े सार्वजनिक करने, आगामी दशकीय जनगणना में ओबीसी की जातिगत जनगणना करवाने, राज्य में ओबीसी को मिलने वाली उम्र प्रतिशत की छूट को टीएसपी क्षेत्र में लागू करवाने, टीएसपी क्षेत्र में कार्यरत नॉन टीएसपी के तृतीय श्रेणी अध्यापकों का स्थानांतरण नॉन टीएसपी में करके टीएसपी में रीट भर्ती में पद बढ़वाने,भारत की प्रथम महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले के जन्म दिवस 3 जनवरी को शिक्षिका दिवस घोषित करने, तमिलनाडु के ₹समाथूवपुरम₹ की तर्ज पर बेघरों के लिए राजस्थान में आवास योजना शुरू करने, बांसवाड़ा के घाटोल उपखंड, गढ़ी उपखंड, डूंगरपुर जिले के आसपुर उपखंड पर राजकीय महाविद्यालय खोलने, छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा बनाए गए डाटा क्वांटीफायर कमीशन की तर्ज पर राजस्थान में भी आयोग बनाकर जातिगत आंकड़े इकट्ठे करके आरक्षण को जनसंख्या के अनुपात में दिए जाने की मांग की। साथ ही डॉक्टर नरेश पटेल ने कांग्रेस के एसटी,एससी, ओबीसी के राष्ट्रीय संयोजक के राजू से मुलाकात कर ओबीसी की जातिगत जनगणना कांग्रेस पार्टी का सहयोग मांगा जिस पर के राजू ने कहा कि कांग्रेस पार्टी ओबीसी की जातिगत जनगणना को लेकर सकारात्मक है तथा जल्दी ही इसको लेकर कांग्रेस पार्टी प्रयास करेगी। मुलाकात के बाद ज्ञापन की प्रतिलिपि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत तथा राज्य सरकार के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित महेश जोशी को दी गई । उक्त जानकारी ओबीसी अधिकार मंच राजस्थान के प्रदेश प्रवक्ता लोकेंद्र गुर्जर ने दी।

# पुलिस अधीक्षक भिवाड़ी के मिशन 100 के तहत स्पेशल टीम भिवाड़ी थाना तातारपुर की प्रभावी कार्रवाई

## दो अवैध देसी पिस्टल,पांच देशी कट्टे व ग्यारा जिन्दा कारतूस सहित आरोपीयो को किया गिरफ्तार

मरुधर विशेष/ हवासिंह चौधरी

मुंडावर।पुलिस महानिरीक्षक उमेशचन्द दत्ता जयपुर रेंज के निदेशानुसार पुलिस अधीक्षक भिवाड़ी शांतनु कुमार सिंह आई पी एस द्वारा चलाए जा रहे मिशन 100 अभियान के तहत विपिन शर्मा आर पी एस मुख्यालय भिवाड़ी अतुल साहू आर पी एस भिवाड़ी के निर्देश व जगराम मीणा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सेक्टर नीमराणा जयप्रकाश बेनीवाल सिंह वृत्त अधिकारी किशनगढ़ बास के निकटतम सुपर वीजन में जिला स्पेशल टीम 02 भिवाड़ी व ततारपुर थानाधिकारी शेरसिंह ने मिशन 100 के तहत वांछित अपराधियों एवं संदिग्ध वाहनों पर विशेष निगरानी रखने एवं कार्रवाई करते हुए अवैध हथियारों की तस्करी के विरुद्ध त्वरित कार्रवाई करते हुए मोटरसाइकल सवार शातिर मुलजिम सचिन व युधिष्ठिर उर्फ लाला जाट को अवैध हथियारों बड़ी भारी खेत सहित गिरफ्तार किया गया । ततारपुर थाना अधिकारी शेर सिंह ने बताया कि जिला स्पेशन टीम 02 भिवाड़ी के कांस्टेबल संजय धनखड़ वह कांस्टेबल महेशचंद कि विशेष सूचना पर जिला स्पेशल टीम व पुलिस थाना ततारपुर द्वारा बडली पुलिया पर नाकाबंदी कर मोटरसाइकिल सवार मुलजिम सचिन पुत्र सुबेसिंह जाति जाट उम्र 22 साल निवासी नगलीओझा पुलिस थाना ततारपुर जिला भिवाड़ी वह युधिष्ठिर उर्फ लाला जाट पुत्र रविंद्रसिंह जाति जाट उम्र 22 साल निवासी नांगल जमालपुर पुलिस थाना खोल जिला रेवाड़ी हरियाणा के कब्जे से विभिन्न प्रकार के कुल 7 आवेदन हथियार 11 जिंदा कारतूस बरामद किए गए मुलजिम को गिरफ्तार किया व मोटरसाइकिल बरामद कि गई। मुल्जिमों से अवैध हथियार की बड़ी खेप के संबंध में खरीद-फरोख्त के संबंध में अनुसंधान जारी है।

# पंचायत समिति की साधारण सभा की बैठक संपन्न

मरुधर विशेष/ हवासिंह चौधरी

राजगढ़ - स्थानीय पंचायत समिति के सभागार में आज पंचायत समिति की साधारण सभा की बैठक पंचायत समिति प्रधान श्रीमती भौरी देवी राठौड़ एवं श्री कांति प्रसाद मीणा विधायक थानागाजी के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुईबैठक में उपस्थित पंचायत समिति सदस्य व विभिन्न ग्राम पंचायतो के सरपंचों ने अपने अपने क्षेत्र की समस्याओं को उठाया वहां पर मौजूद सभी विभागों के अधिकारियों ने समस्याओं को सुना व उनके शीघ्र निस्तारण का आश्वासन दिया बैठक में मौजूद थानागाजी के विधायक कांति प्रसाद मीणा ने उपस्थित सभी अधिकारियों को सभी प्रकार की जन समस्याएं सुनने व उनके शीघ्र निस्तारण के निर्देश दिए आने वाले गर्मी के मौसम को देखते हुए पेयजल की व्यवस्था हेतु विशेष कार्य योजना बनाकर कार्य करने के निर्देश जलदाय विभाग के अधिकारियों को दिएप्रधान भौरी देवी राठौड ने बैठक का समापन किया बैठक में थानागाजी विधायक कांति प्रसाद मीणा, प्रधान भौरी देवी राठौड़, उप प्रधान भोली देवी मीणा, उपखंड अधिकारी ओमप्रकाश मीणा, राजगढ़ तहसीलदार जुगिता मीणा ,ब्लॉक मुख्य चिकित्सा अधिकारी रामस्वरूप मीणा, कृषि विभाग के सहायक निदेशक गिरधर सिंह देवल, जलदाय विभाग के सहायक अभियंता नवीन शर्मा ,कनिष्ठ अभियंता उमा सैनी ,पिंकी मीणा, सार्वजनिक निर्माण विभाग के सहायक अभियंता आर डी मीणा, सहित अनेक विभागों के अधिकारी एवं पंचायत समिति सदस्य नारायण लाल वर्मा, राकेश खंडेलवाल ,मिथलेश देवी शर्मा ,रीना बेरवा, गीता सैनी, जिला परिषद सदस्य राजेंद्र तिवारी सहित अनेक ग्राम पंचायतों के सरपंच एवं गणमान्य लोग मौजूद थे

# राहुल की यात्रा से राजस्थान मे कांग्रेस संगठन की दृष्टि से मजबूत हुई:-जूली

मरुधर विशेष चीफ रिपोर्टर युवराज शर्मा

अलवर। पूर्व केन्द्रीय मंत्री जितेन्द्र सिंह एवं सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री टीकाराम जूली ने कहा कि कांग्रेस के राष्ट्रीय नेता राहुल गांधी राजस्थान के अलवर ग्रामीण विधानसभा क्षेत्र के मालाखेडा में आयोजित हुई ऐतिहासिक विशाल जनसभा एवं शहर की पदयात्रा में लाखों की संख्या में उपस्थित हुए लोगों ने यह साबित कर दिया कि भारत जोड़ो यात्रा देश की राजनीति में नया सवेरा लेकर आएगी। उन्होंने कहा कि राहुल की यात्रा से राजस्थान में कांग्रेस संगठन की दृष्टि से मजबूत हुई है। कांग्रेस के लिए यह पदयात्रा निश्चित तोर पर संजीवनी साबित होगी। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार ने यात्रा के प्रति जो विरोधी माहोल बनाया था उस माहोल को देश की जनता जनार्दन, कांग्रेस कार्यकर्ता, युवा, किसान, महिलाऐं, पत्रकार, साहित्यकार, लेखक, इतिहासकार एवं विभिन्न सामाजिक व व्यापारिक संगठनों ने संयुक्त रूप से शामिल होकर विराम लगा दिया है। उन्होंने राहुल की इस भारत जोड़ो यात्रा को ऐतिहासिक बनाने के लिए अलवर ग्रामीण विधानसभा के कार्यकताओं का आभार जताते हुए कहा कि ना केवल कार्यकताओं ने बल्कि आमजन ने जिस जोश-जुनून के साथ जनसभा व पदयात्रा को सफल बनाया उनके लिए आभार जैसा शब्द भी छोटा है। उन्होंने मोती डूंगरी स्थित कार्यालय पर ग्रामीण विधानसभा के कार्यकताओं को बुलाकर इस सभा को सफल बनाने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा, यूथ कांग्रेस नेशनल कॉर्डिनेटर सिद्धार्थ व्यास, डेयरी चेयरमैन विश्राम गुर्जर, प्रधान दौलतराम जाटव, वीरवती, उपप्रधान हट्या खान, उपप्रधान महेश सैनी,पूर्व डेयरी चेयरमैन रामफल गुर्जर, रामजीलाल बैंसला, संजीव बारेठ, अजय अग्रवाल, हिमांशु शर्मा, गोपीचंद शर्मा, राकेश बैरवा, हाजी उस्मान खान, हाजी आस मोहम्मद, महिला सरपंच अध्यक्ष फरजाना, ओबीसी प्रकोष्ठ महिला अध्यक्ष शोभा साहू, सहित सरपंच, जिला पार्षद, पंचायत समिति सदस्य, पूर्व सरपंच, ब्लॉक अध्यक्ष सहित बड़ी संख्या गणमान्य लोग उपस्थित थे।

### मंत्री जूली ने कार्यालय पर की जनसुनवाई

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता तथा कारागार विभाग मंत्री टीकाराम जूली ने बुधवार को मोती डूंगरी स्थित कार्यालय में जनसुनवाई की। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार के निदेर्शानुसार आमजन की समस्याओं के निस्तारण के लिए नियमित रूप से जनसुनवाई की जा रही है। जनसुनवाई में जिले व प्रदेश से आए लोगों की समस्याओं का समाधान करने की दिशा में विभागीय अधिकारियों को लगातार निर्देश दिए जा रहे है।

## डॉक्टर कीर्ति आचार्य को मिली पीएचडी की उपाधि

बांसवाडा ब्यूरो चीफ अरूण जोशी की रिपोर्ट

बांसवाड़ाःभारतीय विद्या मंदिर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की सहायक आचार्य कीर्ति आचार्य ने सरकारी तथा गैर सरकारी शिक्षको की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति के संदर्भ में व्यवसायिक प्रतिबद्धता, कार्य संतुष्टि एवं तनाव का अध्ययन विषय पर शोध प्रबंध चूरू के डढखर विश्वविद्यालय

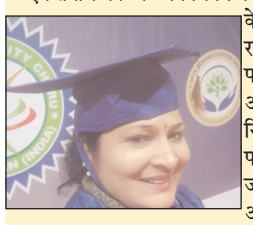

के शिक्षा संकाय के विद्या वाचस्पति गाईड डा. रमेश कुमार के निर्देशन में पूर्ण किया।जिसके फलस्वरूप चूरू विश्वविद्यालय सभागार में आयोजित भव्य समारोह में निदेशक जोगेंद्र सिंह, विश्वविद्यालय कुलपति डा. राजेश पाठक द्वारा शिक्षा, साहित्य, शोध एवं विज्ञान जगत की महनीय विभूतियों के सानिध्य में आचार्य को विद्या वाचस्पति की उपाधि से अलंकृत किया गया। डा कीर्ति आचार्य ने इस उपलब्धि का श्रेय शिक्षा सेवा के अधिकारी लोकेश आचार्य, मूर्धन्य साहित्यकार और ज्योतिषविद् पिताश्री स्व. डा. जवाहरलाल रावल तथा उक्त कार्य के प्रेरक जिला विप्र फाउंडेशन अध्यक्ष योगेश जोशी को दिया है। डा कीर्ति की अभिलाषा है की वे जनजाति वागड़ अंचल में शिक्षा प्रसार में अपना योगदान देकर वागड़ का नाम शिक्षा जगत में राष्ट्रीय फलक पर स्थापित करें।ज्ञातव्य हो की डा कीर्ति वर्तमान में विप्र फाउंडेशन महिला प्रकोष्ठ की जिला अध्यक्षा है। साथ ही सहस्त्र औदिच्य समाज बांसवाड़ा की जिला उपाध्यक्षा भी है।

विप्र फाउंडेशन परिवार एवं महाविद्यालय परिवार ने डा.कीर्ति आचार्य को इस उपलब्धि पर शुभकामनाए प्रेषित की।

## राजस्थान सरकार के 4 वर्ष पूर्ण होने पर आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

मरुधर हिन्द/रमाकान्त शर्मा

बानसूर - कॉलेज शिक्षा राजस्थान जयपुर के आदेशानुसार राजस्थान सरकार के 4 वर्ष पूरे होने के अवसर पर बुधवार को बानसूर के राजकीय महाविद्यालय में आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में महाविद्यालय के सभी छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ राकेश कुमार शर्मा ने जानकारी देते हुए बताया कि राज सरकार के 4 वर्ष पूरे होने पर प्रत्येक महाविद्यालय में प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। उसी को लेकर बानसूर में भी आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर बीए प्रथम वर्ष से अमिता बाई व मोनिका यादव रही। तो वहीं द्वितीय वर्ष में मुस्कान ने प्रथम स्थान प्राप्त किया और तृतीय वर्ष में हेमंत प्रजापत ने प्रथम स्थान व अनीता मीणा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया । सभी विजेता छात्र-छात्राओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया ।

## कस्बे में ब्राह्मण समाज द्वारा परशुराम रथ यात्रा का धूमधाम से किया स्वागत सम्मान

मरुधर विशेष /दिनेश लेखी

कठूमर। कस्बे में ब्राह्मण समाज द्वारा बुधवार रात्रि को परशुराम रथ यात्रा का डीजे के साथ धूमधाम से स्वागत किया गया। विप्र फाउंडेशन द्वारा देश। भर में संचालित भगवान परशुराम कुंड आमंत्रण यात्रा कठुमर ब्लाक में सांय 6 बजे पधारी। यात्रा डीजे ,ढोल,और पुष्प वर्षा से भव्य स्वागत किया गया यात्रा के साथ बाइक रैली संपूर्ण कस्बे में निकाली गई। इस मौके पर झब्बू पाराशर,हरिओम पाराशर, राधेश्याम पप्पू शर्मा, घनश्याम शर्मा,पीयूष पंडित, पिंकू शर्मा,नरेश जैमन, नरेश पाराशर, विकास भारद्वाज, रिमांशु शर्मा, पंकज कटारा, विन्ना,दीपेश,सतीश पाराशर पवन भोजपुरिया सहित कई गणमान्य मौजूद रहे।

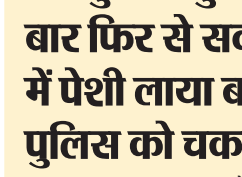

## काजल प्रजापत का नवोदय विद्यालय में हुआ चयन

मरुधर हिन्द/रमाकान्त शर्मा

बानसूर - उपखंड के गांव खोहरी की बेटी काजल प्रजापत पुत्री मुनेश प्रजापत का नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा में चयन हुआ है। नवोदय में

चयनित होने पर छात्रा काजल के घर पर खुशी का माहौल है। छात्रा काजल ने वाई आर कैंपस में तैयारी कर मुकाम हासिल किया। काजल ने अपनी सफलता का श्रेय अपने शिक्षक एवं निदेशक यादराम यादव को दिया है। काजल वर्तमान में कक्षा 6 में अध्ययनरत है। इस अवसर पर संस्था के निदेशक यादराम यादव ने मिठाई बांटकर खुशी व्यक्त की । इस मौके पर दिव्या क्लासेज निदेशक सुरेश ज्ञानपुरिया, भगवान सिंह, रणवीर, राजेश यादव, ओमपाल राज चौहान, देशराज सहित गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

## जशपुर की पुलिसिया चौकसी एक बार फिर से सवालों के घेरे में, कोर्ट में पेशी लाया बंदी हथकड़ी सरका पुलिस को चकमा दे हुवा फरार

आज जशपुर की पुलिसिया चौकसी एक बार फिर से सवालों के घेरे में है। मामला जशपुर के कुनकुरी कोर्ट से जुड़ा है, जहां 376 के मामले में बंद आरोपी को पेशी लाया गया था, उसी दौरान कोर्ट परिसर से देर शाम वापसी के दौरानअंधेरे का फायदा उठाते हुवे पुलिस को चकमा दे हथकड़ी सरका फरार हो गया। बहरहाल बंदी की खोजबीन जारी है।विदित हो कि पूर्व में भी

जशपुर जेल से 2 आरोपी जेल की दीवार फांद फरार हो गए थे, जिसमें एक कैदी को जशपुर पुलिस गिरफ्तार करने में सफलता प्राप्त की है। एक कि अभी भी खोजबीन जारी है। इस मामले में मिली जानकारी के अनुसार पुलिस अभिरक्षा से फरार बंदी का नाम खेलसाय पिता अमीर साय,उम्र 32, निवासी चैनपुर,थाना लखनपुर, जिला सरगुजा उम्र 32 वर्ष, जो कि तुमला थाने में 376 का मामले का विचाराधीन बन्दी है। मंगलवार को बंदियों को पेशी के लिए जिला जेल से कुनकुरी न्यायालय लाया गया था ।वापसी के दौरान जब बंदियों को जेल के वाहन पर बैठाया जा रहा था उसी वक्त खेल साय ने हाथ की हथकड़ी को सरका दिया और न्यायालय परिसर से ही फरार हो गया । मजे की बात यह है कि जेल के जवानों ने चकमा देकर भाग रहे बंदी का पीछा भी किया लेकिन अंधेरा इतना था कि बंदी पुलिस के जवानों के हत्थे नहीं चढ़ पाया । जिला जेल के पुलिसकर्मियों ने कुनकुरी थाना को घटना की सूचना दे दी है ।कुनकुरी पुलिस ने बंदी खेल साय के विरुद्ध आरोपी बंदी के विरुद्ध धारा 224 के तहत थाने में अपराध कायम कर लिया है। थाना प्रभारी भास्कर शर्मा ने बताया कि आरोपी की खोजबीन की जा रही है।

Marudharhind24 news Private Limited के लिए महारानी प्रिन्टर्स 17 वैष्णोदेवी नगर कालवाड़ रोड़ जयपुर से मुद्रित, एवं जीवन सिंह पुरा शामदा अलवर से प्रकाशित। मो.99281-68697, 7014373732, 90797 24256